



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 373]

नई दिल्ली, बुधवार, जून 28, 1995/आषाढ़ 7, 1917

No. 373]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JUNE 28, 1995/ASADHA 7, 1917

वित्त मंत्रालय
(आर्थिक कार्य विभाग)

बीमा प्रभाग

अधिसूचना

नई दिल्ली, 28 जून, 1995

का.आ. 585 (अ) .— केंद्रीय सरकार, साधारण बीमा कारबार (राष्ट्रीयकरण) अधिनियम, 1972 (1972 का 57) की धारा 17 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केंद्रीय सरकार निम्नलिखित स्कीम बनाती है, अर्थात् :—

अध्याय—1

प्रारम्भिक

1. संक्षिप्त नाम और आरम्भ : (1) इस स्कीम का संक्षिप्त नाम साधारण बीमा (कर्मचारी) पेंशन स्कीम, 1995 है।

(2) इस स्कीम में अभिव्यक्त रूप से अन्यथा उपबंधित के सिवाय इस स्कीम को पहली नवम्बर, 1993 से प्रवृत्त हुआ समझा जाएगा।

2. परिभाषाएं :—इस स्कीम में, जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

(क) “अधिनियम” से साधारण बीमा कारबार (राष्ट्रीयकरण) अधिनियम, 1972 (1972 का 57) अभिप्रेत है ;

(ख) “बीमांकक” का वही अर्थ होगा जो इसके लिए बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) की धारा (2) के खण्ड (1) में नियत किया गया है ;

(ग) “परिशिष्ट” से इस स्कीम में उपाबद्ध “परिशिष्ट” अभिप्रेत है ;

(घ) “असत उपलब्धियां” से किसी कर्मचारी द्वारा अपनी सेवा के अंतिम दस मास के दौरान लिए गए, वेतन का असत अभिप्रेत है ;

- (ड) "संतान" से कर्मचारी की संतान अभिप्रेत है जो, यदि वह पुत्र है तो 25 वर्ष से कम आयु का हो, और यदि पुत्री है तो अविवाहिता हो और पच्चीस वर्ष से कम आयु की हो और "संतान" का पद अर्थ तदनुसार लगाया जाएगा ;
- (च) "कम्पनी" से नेशनल इंड्योरेंस कम्पनी लिमिटेड, दि न्यू इंडिया इंड्योरेंस कम्पनी लिमिटेड, दि ओरिएण्टल इंड्योरेंस कम्पनी लिमिटेड और यूनाइटेड इंडिया इंड्योरेंस कम्पनी लिमिटेड अभिप्रेत है ;
- (ख) "सश्रम प्राधिकारी" से—
- (i) निगम में महाप्रबंधक से ऊपर के पदों के मामले में निगम और कम्पनी में महाप्रबंधक से ऊपर के पदों के मामले में, कम्पनी ;
- (ii) निगम में महाप्रबंधक या सहायक महाप्रबंधक काडर के अधिकारियों के मामले में निगम का अध्यक्ष और कम्पनी में महाप्रबंधक या सहायक महाप्रबंधक काडर के अधिकारियों के मामले में कम्पनी का अध्यक्ष-एवं-प्रबंध निदेशक ;
- (iii) निगम में प्रबंधक या उप-प्रबंधक काडर के अधिकारियों के मामले में निगम का प्रबंध निदेशक और कम्पनी में प्रबंधक या उप-प्रबंधक काडर के अधिकारियों के मामले में कम्पनी का अध्यक्ष-एवं-प्रबंध निदेशक ;
- (iv) निगम में अन्य काडरों के अधिकारियों के मामले में निगम का कार्मिक भारसाधक महाप्रबंधक और कम्पनी में अन्य काडरों के अधिकारियों के मामलों में कम्पनी का कार्मिक भारसाधक महाप्रबंधक ;
- (v) निगम में अन्य किसी मामले में निगम का कार्मिक भारसाधक प्रबंधक और कम्पनी में अन्य किसी मामले में कम्पनी का कार्मिक भारसाधक प्रबंधक अभिप्रेत है ;
- (ज) "अंशदान" से, यथास्थिति निगम या किसी कम्पनी द्वारा कर्मचारी की ओर से निधि में जमा की गई राशि अभिप्रेत है किन्तु इसमें ब्याज के रूप में जमा की गई कोई राशि शामिल नहीं होगी ;
- (झ) "निगम" से अधिनियम की धारा 9 के अधीन गठित भारतीय साधारण बीमा निगम अभिप्रेत है ;
- (ञ) "सेवा निवृत्ति की तारीख" से उस मास का अंतिम दिवस जिसमें कर्मचारी अधिवर्षिता की आयु प्राप्त करता है या वह तारीख जिसको निगम या किसी कम्पनी द्वारा उसे सेवानिवृत्ति किया जाता है या वह तारीख जिसको कर्मचारी स्वेच्छा से सेवानिवृत्त होता है, अभिप्रेत है ;
- (ट) "कर्मचारी" से निगम या किसी कम्पनी की सेवा में पूर्णकालिक कार्य के लिए स्थायी आधार पर नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है और जो ऐसा विकल्प लेता है और इस स्कीम द्वारा शासित होता है ;
- (ठ) किसी कर्मचारी के संबंध में "कुटुम्ब" से निम्नलिखित अभिप्रेत है :—
- (i) पुरुष कर्मचारी के मामले में पत्नी और महिला कर्मचारी के मामले में पति ;
- (ii) न्यायिक रूप से अलग हुए/हुई पति या पत्नी, किन्तु यह अलग-अलग जारकर्म के आधार पर न हुआ हो और उत्तरजीवी व्यक्ति जारकर्म का दोषी न ठहराया गया हो ;
- (iii) पुत्र जो पच्चीस वर्ष का नहीं हुआ है और अविवाहित पुत्री, जो पच्चीस वर्ष की नहीं हुई है जिसके अंतर्गत सेवा निवृत्ति के पूर्व वैध रूप से दत्तक लिया पुत्र या पुत्री भी है ;
- (ड) "वित्तीय वर्ष" से पहली अप्रैल से आरंभ होने वाला वर्ष अभिप्रेत है ;
- (ढ) "निधि" से इस स्कीम के पैरा 5 के अधीन गठित निधि अभिप्रेत है ;
- (ण) "अधिसूचित तारीख" से वह तारीख अभिप्रेत है है जिसको यह स्कीम राजपत्र में प्रकाशित की जाती है,
- (त) "वेतन" में शामिल हैं :—
- (क) ऐसे कर्मचारी के संबंध में जो पहली जनवरी, 1986 को या उसके पश्चात् किन्तु 1 नवम्बर, 1993 से पूर्व सेवा निवृत्त हुआ हो, या उनकी मृत्यु हो गई हो—
- (i) मूल वेतन, जिसमें वृद्धिरुद्ध वेतनवृद्धियां यदि कोई हों, भी शामिल हैं, और ;
- (ii) भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए और मंहगाई भत्ते का संदाय करने के प्रयोजनों के लिए गणना में लिए गए सभी भत्ते ;
- (ख) ऐसे कर्मचारी के संबंध में जो 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् सेवा में रहते हुए सेवा निवृत्त होता है या जिसकी मृत्यु हो जाती है—
- (i) मूल वेतन, जिसके अंतर्गत वृद्धिरुद्ध वेतनवृद्धियां, यदि कोई हों, भी शामिल हैं ; और
- (ii) भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए और मंहगाई भत्ते का संदाय करने के प्रयोजनों के लिए गणना में लिए गए सभी भत्ते ;
- (iii) नियत वैयक्तिक भत्ता, जो वेतमान में अंतिम वेतन वृद्धि से अधिक नहीं होगा ; और

(iv) औद्योगिक कर्मचारियों के लिए 1960=100 अंशला में अखिल भारतीय औद्योगिक उपभोक्ता मूल्य सूचकांक 1148 तक संगणित मंहगाई भत्ता;

(घ) "पेंशन" में मूल पेंशन और इस स्कीम के अध्याय 6 में निविष्ट अतिरिक्त पेंशन शामिल है;

(द) पेंशनभोगी से बड़ कर्मचारी अभिप्रेत है जो इस स्कीम के अधीन पेंशन के लिए पात्र है;

(ध) "अर्हक सेवा" से अभिप्रेत है इयूटी पर रहकर या अन्यथा की गई ऐसी सेवा जिसे इस स्कीम के अधीन पेंशन के लिए गणना में लिया जाएगा;

(न) "सेवानिवृत्ति" से अभिप्रेत है--

(i) भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व और बीमा विभाग) की अधिसूचना सं. का.आ. 326(अ), तारीख 27 मई, 1974 के अधीन अधिसूचित साधारण बीमा (पर्यवेक्षीय, लिपिकीय और अधीनस्थ कर्मचारिवृद्ध के वेतनमानों और सेवा की अन्य शर्तों का सुव्यवस्थीकरण और पुनरीक्षण) स्कीम, 1974 के पैरा 12 में अन्तर्विष्ट उपबंधों के अनुसार सेवानिवृत्ति;

(ii) भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (आर्थिक कार्य विभाग) की अधिसूचना सं. का.आ. 627(अ), तारीख 21 सितंबर, 1976 के अधीन अधिसूचित साधारण बीमा (अधिकारियों और विकास कर्मचारिवृद्ध की सेवा-समाप्ति, अधिवर्षिता और सेवानिवृत्ति) स्कीम, 1976 के पैरा 4 में अन्तर्विष्ट उपबंधों के अनुसार सेवानिवृत्ति;

(iii) इस स्कीम के पैरा 30 में अन्तर्विष्ट उपबंधों के अनुसार स्वेच्छया सेवानिवृत्ति;

(प) "सुव्यवस्थीकरण स्कीम" से अभिप्रेत है,—

(i) भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व और बीमा विभाग) की अधिसूचना संख्या का.आ. 326(अ), तारीख 27 मई, 1974 के अधीन अधिसूचित साधारण बीमा (पर्यवेक्षीय, लिपिकीय और अधीनस्थ कर्मचारिवृद्ध के वेतनमानों और सेवा की अन्य शर्तों का सुव्यवस्थीकरण और पुनरीक्षण) स्कीम, 1974;

(ii) भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व और बीमा विभाग) की अधिसूचना का.आ. 521(अ), तारीख 17 सितंबर, 1975 के अधीन अधिसूचित साधारण बीमा (अधिकारियों के वेतनमानों और सेवा की अन्य शर्तों का सुव्यवस्थीकरण), स्कीम 1975;

(iii) भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (आर्थिक कार्य विभाग) की अधिसूचना सं. का.आ. 327(अ), तारीख 29 अप्रैल, 1976 के अधीन अधिसूचित

साधारण बीमा (विकास कर्मचारिवृद्ध के वेतनमानों और सेवा की अन्य शर्तों का सुव्यवस्थीकरण), स्कीम, 1976;

(iv) भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (आर्थिक कार्य विभाग) की अधिसूचना सं. का.आ. 627(अ), तारीख 21 सितंबर, 1976 के अधीन अधिसूचित साधारण बीमा (अधिकारियों और विकास कर्मचारिवृद्ध की सेवा समाप्ति, अधिवर्षिता और सेवानिवृत्ति) स्कीम, 1976;

(फ) "न्यास" से पैरा 5 के उप-पैरा (1) के अधीन गठित निगम या किसी कम्पनी का न्यास अभिप्रेत है;

(ब) "न्यासी" से पैरा 5 के अधीन गठित निधि का न्यासी अभिप्रेत है;

(भ) "भविष्य निधि का न्यासी" से यथास्थिति, निगम या किसी कम्पनी के कर्मचारियों से संबंधित भविष्य निधि का न्यासी अभिप्रेत है;

(म) जिन अन्य शब्दों और पदों का इस स्कीम में प्रयोग किया गया है और जो परिभाषित नहीं किए गए हैं, किन्तु अधिनियम या सुव्यवस्थीकरण स्कीमों में जो परिभाषित हैं उनके क्रमशः वही अर्थ होंगे जो उन्हें अधिनियम या संबंधित सुव्यवस्थीकरण स्कीम में दिए गए हैं।

अध्याय-2

लागू होना और पात्रता

3. लागू होना—यह स्कीम ऐसे कर्मचारियों पर लागू होगी जो—

(1) (क) 1 जनवरी, 1986 को या उसके पश्चात्, यथास्थिति निगम या किसी कंपनी की सेवा में थे किन्तु 1 नवम्बर, 1993 से पूर्व सेवानिवृत्त हो गए थे; और

(ख) अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन की अवधि के भीतर लिखित में निधि का सदस्य बनने के विकल्प का प्रयोग करते हैं; और

(ग) खंड (ख) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात्, साठ दिन की अवधि के भीतर, भविष्य निधि में निगम या कंपनी के अंगदान को संपूर्ण रकम को उस पर प्रोद्भूत ब्याज, सहित, भविष्य निधि खातों के परिनिर्धारण की तारीख से, यथास्थिति, निगम या कंपनी को पूर्वोक्त रकम लौटाने की तारीख तक उस रकम पर छह प्रतिशत की वार्षिक दर पर अतिरिक्त साधारण ब्याज के साथ वापस कर दें; और

- (घ) खंड (ख) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात्, साठ दिन के भीतर भविष्य निधि खाते में यथास्थिति, निगम के अंशदान या कंपनी के अंशदान में से निकाली गई अप्रतिदेय संपूर्ण रकम, यदि कोई हो और अंतिम परिनिर्धारण की तारीख से पूर्व उस पर प्रोद्भूत ब्याज को, निकाले जाने की तारीख से भविष्य निधि खाते के परिनिर्धारण की तारीख तक बारह प्रतिशत वार्षिक ब्याज सहित और भविष्य निधि खाता के परिनिर्धारण से रकम वापस किए जाने की तारीख तक उस पर छह प्रतिशत की वार्षिक दर पर अतिरिक्त ब्याज के साथ वापस कर दें; या
- (2) (क) 1 नवंबर, 1993 या उसके पश्चात् परंतु अधिसूचित तारीख से पूर्व सेवानिवृत्त हो गया है; और
- (ख) अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन की अवधि के भीतर लिखित में निधि का सदस्य बनने के विकल्प का प्रयोग करते हैं; और
- (ग) खंड (ख) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन की अवधि के भीतर भविष्य निधि में, यथास्थिति, निगम या कंपनी के अंशदान की संपूर्ण रकम और उस पर प्रोद्भूत ब्याज को, भविष्य निधि खातों के परिनिर्धारण की तारीख से, यथास्थिति, निगम या कंपनी की उक्त रकम लौटाने तक उस रकम पर बारह प्रतिशत की वार्षिक दर पर अतिरिक्त साधारण ब्याज के साथ वापस कर दें;
- (घ) खंड (ख) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन के भीतर, भविष्य निधि खाते में, यथास्थिति, निगम के अंशदान या कंपनी के अंशदान, यदि कोई हो, भविष्य निधि खाते के अंतिम परिनिर्धारण की तारीख से पूर्व, रकम निकाले जाने की तारीख से भविष्य निधि खाते के परिनिर्धारण की तारीख तक बारह प्रतिशत वार्षिक की दर से ब्याज सहित, और उस रकम पर, भविष्य निधि खाते के परिनिर्धारण की तारीख से प्रतिदाय की तारीख तक छह प्रतिशत वार्षिक दर पर अतिरिक्त साधारण ब्याज के साथ वापस कर दें; या
- (3) (क) अधिसूचित तारीख से पूर्व निगम या किसी कंपनी की सेवा में हैं और अधिसूचित तारीख को या उसके पश्चात् निगम या किसी कंपनी की सेवा में बने रहते हैं; और
- (ख) अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन की अवधि के भीतर लिखित में निधि का सदस्य बनने के विकल्प का प्रयोग करते हैं;
- (ग) भविष्य निधि न्यास को, निगम या कंपनी के संपूर्ण अंशदान को, उस पर प्रोद्भूत ब्याज सहित पैरा 5 के अधीन इस प्रयोजनार्थ गठित निधि के खाते में अन्तर्गत करने के लिए प्राधिकृत करें; या
- (घ) उप-पैरा (ख) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन के भीतर भविष्य निधि खाते में निगम के अंशदान या कंपनी के अंशदान में से निकाली गई अप्रतिदेय संपूर्ण रकम और उस पर प्रोद्भूत ब्याज को, ऐसे निकाले जाने की तारीख से इसे निगम या कंपनी को वापस किए जाने की तारीख तक, उस पर बारह प्रतिशत की वार्षिक दर पर अतिरिक्त ब्याज के साथ, यथास्थिति, निगम या कंपनी को वापस कर दें; या
- (4) अधिसूचित तारीख को या उसके पश्चात्, यथास्थिति, निगम या कंपनी की सेवा में पदग्रहण करें; या
- (5) 1 नवंबर, 1993 को या उसके पश्चात् किसी भी समय, यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी की सेवा में थे और जिनकी सेवानिवृत्ति के पश्चात् किन्तु अधिसूचित तारीख से पूर्व मृत्यु हो गई हो, ऐसे कर्मचारियों के कुटुम्ब, उस तारीख से, जिसको यदि वे अपनी मृत्यु की तारीख तक जीवित रहते तो, इस स्कीम के अग्रीन पेंशन पाने के हकदार होते, उनकी मृत्यु की तारीख तक उन्हें संदेय पेंशन की रकम प्राप्त करने के हकदार होंगे, यदि मृत कर्मचारी का कुटुम्ब—
- (क) अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन के भीतर लिखित में निधि का सदस्य बनने के विकल्प का प्रयोग करता है; और
- (ख) उपर्युक्त खण्ड (क) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन के भीतर भविष्य निधि में निगम या कंपनी के अंशदान की संपूर्ण रकम और उस पर प्रोद्भूत ब्याज को, भविष्य निधि खातों के परिनिर्धारण की तारीख से, यथास्थिति, निगम या कंपनी को उक्त रकम लौटाने की तारीख तक उस रकम पर बारह प्रतिशत की वार्षिक दर पर अतिरिक्त साधारण ब्याज के साथ वापस कर देता है; और

(ग) उपर्युक्त खण्ड (क) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन के भीतर भविष्य निधि खाते में निगम के अंशदान में से निकाली गई किसी अप्रतिदेय रकम और भविष्य निधि खाते के अन्तिम परिनिर्धारण की तारीख से पूर्व उस पर प्रोद्भूत व्याज को, निकाले जाने की तारीख से उपर्युक्त रकम निगम या किसी कंपनी को वापस करने की तारीख तक, उक्त रकम पर बारह प्रतिशत की वार्षिक दर पर अतिरिक्त साधारण व्याज के साथ वापस कर देता है; या

(6) 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् निगम या कंपनी की सेवा में पदग्रहण किया हो किन्तु अधिसूचित तारीख से पूर्व, यथास्थिति, निगम या कंपनी की सेवा में रहते हुए जिसकी मृत्यु हो गई हो, उनके कुटुम्ब इस स्कीम के अधीन कुटुम्ब पेंशन के हकदार होंगे:

परन्तु यह कि ऐसे मृत कर्मचारी का कुटुम्ब अधिसूचित तारीख से एक सौ अस्सी दिन के भीतर भविष्य निधि में निगम के अंशदान या कंपनी के अंशदान, यदि कोई हो, की संपूर्ण रकम को, उस पर प्रोद्भूत व्याज और भविष्य निधि खाते के परिनिर्धारण की तारीख से यथास्थिति, निगम या कंपनी को उक्त रकम लौटाने की तारीख तक उक्त रकम पर बारह प्रतिशत वार्षिक अतिरिक्त दर से साधारण व्याज के साथ वापस कर देता है; या

परन्तु यह और कि ऐसे मृत कर्मचारी का कुटुम्ब, कुटुम्ब पेंशन प्रदान करने के लिए लिखित में आवेदन करेगा; या

(7) 1 जनवरी, 1986 को या उसके पश्चात् किसी भी समय, यथास्थिति, निगम या कंपनी की सेवा में थे और जिनकी 31 अक्टूबर, 1993 को या इससे पूर्व सेवा में रहते हुए मृत्यु हो गई हो या 31 अक्टूबर, 1993 को या इससे पूर्व सेवानिवृत्त हो चुके हों किन्तु अधिसूचित तारीख से पूर्व मृत्यु हो गई हो, ऐसे मामले में ऐसे कर्मचारियों के कुटुम्ब इस स्कीम के अधीन कुटुम्ब पेंशन के हकदार होंगे, यदि मृत कर्मचारी का कुटुम्ब—

(क) अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन के भीतर निधि का सदस्य बनने के विकल्प का लिखित रूप में प्रयोग करे;

(ख) उपर्युक्त खंड (क) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन के भीतर भविष्य निधि में, यथास्थिति, निगम के अंशदान या कंपनी के अंशदान की संपूर्ण रकम और उस पर प्रोद्भूत व्याज को, भविष्य निधि खाते के परिनिर्धारण की तारीख से यथास्थिति, निगम या कंपनी को उक्त रकम को

लौटाने की तारीख तक उस रकम पर छह प्रतिशत वार्षिक की दर से अतिरिक्त साधारण व्याज के साथ वापस कर दें; या

(ग) खण्ड (क) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन के भीतर भविष्य निधि खाते में, यथास्थिति, निगम के अंशदान या कंपनी के अंशदान में से निकाली गई अप्रतिदेय संपूर्ण रकम, और भविष्य निधि खाते के अन्तिम परिनिर्धारण की तारीख से पहले उस पर प्रोद्भूत व्याज को, निकाले जाने की तारीख भविष्य निधि खाते के परिनिर्धारण की तारीख तक उस पर बारह प्रतिशत की वार्षिक दर पर व्याज सहित और भविष्य निधि खाते के निर्धारण की तारीख से वापस करने की तारीख तक उक्त रकम पर छह प्रतिशत वार्षिक दर पर अतिरिक्त व्याज के साथ वापस कर देता है; या

(8) 31 अक्टूबर, 1993 को या इससे पूर्व निगम या कंपनी की सेवा में पदग्रहण किया हो और जिसकी 1 नवम्बर 1993 को या इसके पश्चात् किन्तु अधिसूचित तारीख से पूर्व सेवा में रहते हुए मृत्यु हो गई हो, ऐसे मामले में, ऐसे कर्मचारियों के कुटुम्ब इस स्कीम के अधीन कुटुम्ब पेंशन के हकदार होंगे, यदि मृत कर्मचारी का कुटुम्ब—

(क) अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन की अवधि के भीतर लिखित में, यथास्थिति, किसी निगम या कंपनी की निधि का सदस्य बनने के विकल्प का प्रयोग करता हो; और

(ख) उपर्युक्त खंड (क) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन के भीतर भविष्य निधि में, यथास्थिति, निगम के अंशदान या कंपनी के अंशदान की संपूर्ण रकम और उस पर प्रोद्भूत व्याज को, भविष्य निधि खाते के परिनिर्धारण की तारीख से यथास्थिति, निगम या कंपनी को उक्त रकम लौटाने की तारीख तक उक्त रकम पर बारह प्रतिशत वार्षिक दर से अतिरिक्त साधारण व्याज के साथ वापस कर दें।

(ग) खण्ड (क) में विनिर्दिष्ट एक सौ बीस दिन की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् साठ दिन के भीतर भविष्य निधि खाते में, यथास्थिति, निगम के अंशदान या कंपनी के अंशदान में से निकाली गई अप्रतिदेय संपूर्ण रकम और भविष्य निधि खाते के अन्तिम परिनिर्धारण की तारीख से पहले उस पर प्रोद्भूत व्याज को, निकाले जाने की तारीख से भविष्य निधि खाते के परिनिर्धारण की तारीख तक उस पर बारह प्रतिशत की वार्षिक दर पर व्याज सहित और भविष्य निधि खाते के

परिमर्धारण की तारीख से वापस करने की तारीख तक उक्त रकम पर छह प्रतिशत वार्षिक दर पर अतिरिक्त व्याज के साथ वापस कर देता है ; या

4. भविष्य निधि में अंगदान करने का विकल्प—(1) पैरा 3 के उपपैरा (4) में किसी बात के होते हुए भी, ऐसा कर्मचारी, जो अधिसूचित तारीख की या इसके पश्चात् 35 वर्ष या इससे अधिक की आयु में, यथास्थिति, निगम या कंपनी की सेवा में पदग्रहण करता है, अपनी नियुक्ति की तारीख से नब्बे दिन की अवधि के भीतर पेंशन के अपने अधिकार छोड़ने का चयन करता है तो यह स्कीम उसे लागू नहीं होगी ।

(2) उपर्युक्त उप पैरा (1) और पैरा (3) में निर्दिष्ट विकल्प का प्रयोग एक बार किए जाने पर अंतिम होगा ।

अध्याय - 3

निधि

5. निधि का गठन—(1) निगम और प्रत्येक कंपनी, अधिसूचित तारीख से एक सौ बीस दिन के भीतर अप्रति-संहरणीय न्यास के अधीन नीचे दी गई नारणी के स्तंभ (2) में विनिर्दिष्ट एक निधि का गठन करेगा ।

सारणी

निगम/कंपनी का नाम	निधि का नाम
(1)	(2)
(1) भारतीय साधारण बीमा निगम	साधारण बीमा निगम (कर्मचारी) पेंशन निधि
(2) नेशनल इश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड	नेशनल इश्योरेन्स कंपनी (कर्मचारी) पेंशन निधि
(3) दि न्यू इंडिया इश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड	दि न्यू इंडिया इश्योरेन्स कंपनी (कर्मचारी) पेंशन निधि
(4) दि ओरियन्टल इश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड	दि ओरियन्टल इश्योरेन्स कंपनी (कर्मचारी) पेंशन निधि
(5) यूनाइटेड इंडिया इश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड	यूनाइटेड इंडिया इश्योरेन्स कंपनी (कर्मचारी) पेंशन निधि

(2) निधि में कर्मचारी या उसके कुटुम्ब को इस स्कीम के अनुसार पेंशन या कुटुम्ब पेंशन के संदाय के एकमात्र प्रयोजन के लिए उपबंध होगा ।

(3) यथास्थिति, निगम यह कंपनी निधि का अभिदाय-कर्ता होगा और यह सुनिश्चित करेगा कि निधि में पर्याप्त धनराशि की व्यवस्था रहे ताकि न्यास इस स्कीम के अधीन हिताधिकारियों को संदाय कर सके ।

6. भविष्य निधि न्यास का दायित्व—यथास्थिति, निगम या कंपनी का भविष्य निधि न्यास, निधि के गठन के तुरन्त पश्चात् प्रत्येक कर्मचारी के संबंध में भविष्य निधि में निगम या कंपनी के अंगदान का संचित अतिशेष, ऐमें अंतरण की तारीख तक उस पर प्रोद्भूत व्याज सहित पैरा 5 में निर्दिष्ट प्रत्येक निधि में अन्तर्गत करेगा ।

7. निधि की संरचना—निधि में निम्नलिखित होगा, अर्थात्—

(1) कर्मचारियों के वेतन या प्रतिभास दस प्रतिशत की दर से यथास्थिति, निगम या कंपनी द्वारा अंगदान ;

स्पष्टीकरण—इस पैरा के प्रयोजन के लिए “वेतन” में निम्नलिखित सम्मिलित है—

(i) मूल वेतन,

(ii) महंगाई भत्ते से भिन्न ऐमें भत्ते जिन्हें भविष्य निधि में अंगदान करने और महंगाई भत्ते के संदाय के प्रयोजनों के लिए गणना में लिया जाता है,

(iii) मूल वेतन पर संदेय महंगाई भत्ता और उपर्युक्त खंड (ii) में विनिर्दिष्ट भत्ते, औद्योगिक कर्मचारी के लिए 1960-100 शृंखला में अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की त्रैमासिक औसत के आधार पर सूचकांक संख्या 1148 तक; और

(iv) उस सीमा तक भत्ते, जिस सीमा तक वे विषय निधि, मकान किराया भत्ता, उपदान और प्रोन्नति पर वेतन के पुनर्नियतन के लिए गणना में लिए जाते हो ;

परन्तु यह कि यथास्थिति, निगम या कंपनी कर्मचारियों के भविष्य निधि खाते में कोई अंगदान नहीं करेगा ।

(2) ऐसं कर्मचारियों की दशा में, भविष्य निधि में, यथास्थिति, निगम या कंपनी का संचित अंगदान और ऐसं अंतरण की तारीख तक उस पर प्रोद्भूत व्याज की रकम ;

(3) ऐमें कर्मचारियों द्वारा, जो इस अधिसूचित तारीख से पूर्व संबानिवृत हो गए हों किन्तु जिन्होंने इस स्कीम में अन्तर्विष्ट उपबंधों के अनुसार पेंशन लेने का विकल्प लिया हो वापस किए गए व्याज सहित निगम के अंगदान की रकम ।

(4) निधि के धन से खरीदी गई वार्षिकियों या प्रतिभूतियों पर किया गया निवेश और उस पर व्याज ।

(5) निधि की पूंजी आस्तियों से उद्भूत किसी पूंजी अभिनाश की रकम ।

(6) इस स्कीम के पैरा 11 में अन्तर्विष्ट उपबंधों के अनुसार, यथास्थिति, निगम या कंपनी द्वारा किया गया अतिरिक्त वार्षिक अंशदान।

(7) निधि में जमा की गई रकमों के निवेश से कोई आय।

(8) मृत कर्मचारियों के कुटुम्बों द्वारा वापस किए गए ब्याज सहित, यथास्थिति, निगम या कंपनी के अंशदान से मिलकर बनी रकम।

(9) कर्मचारियों या द्वारा वापस की गई, यथास्थिति, निगम या कंपनी की अप्रतिदेय रकम और उस पर ब्याज।

8. न्यासी बोर्ड—(1) न्यासी बोर्ड, यथास्थिति, निगम या कंपनी द्वारा नियुक्त किए जाने वाले ऐसे व्यक्तियों से मिलकर बनेगा जिनकी संख्या, जैसा यथास्थिति, निगम या कंपनी द्वारा यथा अवधारित तीन से कम और नौ से अधिक नहीं होगी।

(2) न्यासियों की नियुक्ति का अधिकार, यथास्थिति, निगम या कंपनी में निहित होगा और ऐसी सभी नियुक्तियां लिखित रूप से की जाएंगी।

(3) यथास्थिति, निगम या कंपनी, एक न्यासी को न्यासी बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में नामनिर्देशित करेगा। निगम या कंपनी, यथास्थिति, किसी एक न्यासी को अनुकल्पी अध्यक्ष के रूप में भी नामनिर्देशित करेगा, जो अध्यक्ष की अनुपस्थिति में अध्यक्ष के रूप में कार्य करेगा।

9. न्यास द्वारा निगम या कंपनी के निर्देशों का पालन किया जाएगा :—न्यासी निधि के समुचित कार्यकरण के लिए, यथास्थिति, निगम या कंपनी द्वारा दिए गए सभी निर्देशों का पालन करेगा।

10. निधि की लेखा बहियां :—

(1) निधि के लेखाओं में, निधि से संबंधित सभी वित्तीय सञ्चयहारों के विवरण, यथास्थिति, निगम या कंपनी द्वारा यथाविनिर्दिष्ट ढंग से अन्तर्विष्ट होंगे।

(2) प्रत्येक वित्तीय वर्ष की समाप्ति से एक सौ अस्सी दिन के भीतर न्यास, न्यास की आस्तियों और दायित्वों का सामान्य लेखा दर्शाते हुए न्यास का वित्तीय विवरण तैयार करेगा और उसकी एक प्रति यथास्थिति, निगम या कंपनी को अर्पित करेगा।

(3) निधि के लेखाओं की कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 619 के उपबंधों के अनुसार लेखा परीक्षा की जाएगी।

(4) कंपनी की निधि के लेखाओं की कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 224 के उपबंधों के अनुसार लेखापरीक्षा की जाएगी।

11. निधि की वीमांकिक जांच पड़ताल :—यथास्थिति, निगम या कंपनी प्रत्येक वित्तीय वर्ष में 31 मार्च को निधि की वित्तीय स्थिति की किसी वीमांकिक द्वारा जांच पड़ताल कराएगा। कराएगी और निधि में ऐसा अतिरिक्त वार्षिक अंशदान करेगा/करेगी जो इस स्कीम के अधीन लाभों का संदाय सुनिश्चित करने के लिए अपेक्षित हों :

परन्तु यह कि यथास्थिति, निगम या कंपनी, जिस वित्तीय वर्ष में निधि का गठन किया गया है, उसके ठीक पश्चात्पूर्वी 31 मार्च को निधि की वित्तीय स्थिति के संबंध के वीमांकिक से जांच पड़ताल कराएगा।

12. निधि का निवेश :—निधि में अंशदान की गई या प्राप्त हुई अथवा निधि में व्याज या अन्यथा प्रोद्भूत रकम का, यथास्थिति, अंशदान, प्राप्ति या प्रोद्भव की तारीख से युक्तियुक्त समय के भीतर आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन बनाए गए आयकर नियम, 1962 के नियम 85 और नियम 89 के खण्ड (ii) के अनुसार निपटान किया जाएगा और निधि में यथा लागू भारत में पूंजी या व्याज दोनों के संबंध में सदेव होगा।

13. निधि से संदाय :—न्यास द्वारा लाभों का संदाय निम्नलिखित रूप में किया जाएगा, अर्थात् :—

(क) न्यास, यथास्थिति, प्रत्येक कर्मचारी या उसके कुटुम्ब के संबंध में उस समय जब इस स्कीम के अधीन कर्मचारी या उसके कुटुम्ब फायदों के लिए पात्र हो जाता है या उसकी मृत्यु हो जाने पर कुटुम्ब पेंशन के संबंध में भारतीय जीवन बीमा निगम से तत्काल वापिकियां खरीदेगा;

(ख) न्यास, पैरा 5 के उपपैरा (3) के अधीन यथा पेशित, यथास्थिति, निगम या कंपनी द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाली निधि में अतिरिक्त धनराशि की उपलब्धता के अधीन रहते हुए, इस स्कीम के अनुसार संदेय फायदों का जब कभी उर्ध्वगामी पुनरीक्षण (बढ़ाया जाना) आवश्यक हो जाए, अतिरिक्त वापिकियां खरीदेगा;

(ग) न्यास, इस स्कीम के अधीन संदेय फायदों को किसी भी कारण से और नीचे की ओर पुनरीक्षण किए जाने की स्थिति में, खरीदी गई वापिकियां के अधीन भारतीय जीवन बीमा निगम से प्राप्त उतने फायदों को जो इस स्कीम के अधीन संदेय फायदों से अधिक है, निधि में जमा करेगा।

अध्याय—4

अर्हक सेवा

14. अर्हक सेवा :—इस स्कीम में अन्य शर्तों के अधीन रहते हुए, ऐसा कर्मचारी जिसने अपनी सेवा निवृत्ति की तारीख को निगम या किसी कंपनी में न्यूनतम 10 वर्ष सेवा की हो, पेंशन के लिए अर्हक होगा।

15. अर्हक सेवा का आरंभ :—इस स्कीम में अंत-विष्ट उपबंधों के अधीन रहते हुए किसी कर्मचारी की अर्हक सेवा उस तारीख से आरंभ होगी, जिस तारीख को वह उस पद का कार्यभार ग्रहण करता है, जिस पर वह पहली बार नियमित आधार पर नियुक्त हुआ हो।

16. परिवीक्षा पर की गई सेवा की गणना :—निगम या संबंधित कंपनी में किसी पद पर परिवीक्षा पर की गई सेवा अर्हक होगी, यदि उसके पश्चात् उसी पद या किसी अन्य पद पर उसकी पुष्टि हो जाती है।

17. छुट्टी पर व्यतीत अवधि की गणना :—निगम या संबंधित कंपनी में सेवा काल के दौरान ऐसी सभी छुट्टी की गणना अर्हक सेवा के रूप में की जाएगी जिसके लिए छुट्टी वेतन मंजूर हो।

परंतु चिकित्सा प्रमाण-पत्र के आधार पर या सिविल अशांति के कारण कर्मचारी द्वारा कार्यभार ग्रहण न करने या पुनः ग्रहण न कर पाने के कारण मंजूर की गई बिना वेतन के असाधारण छुट्टी की भी अर्हक सेवा के रूप में गणना की जाएगी यदि यह संपूर्ण सेवावधि में 12 मास से अधिक न हो।

18. एक वर्ष से कम की सेवा का खंडित सेवा काल :—यदि किसी कर्मचारी की सेवा में एक वर्ष से कम का खंडित सेवा काल सम्मिलित है तो यदि यह व्यवधान छह मास से अधिक की अवधि का हो तो उसे एक वर्ष माना जाएगा और यदि व्यवधान अवधि छह मास या कम हो तो इसे छोड़ दिया जाएगा।

19. प्रशिक्षण में व्यतीत अवधि की गणना :—किसी कर्मचारी द्वारा उसकी नियुक्ति या पुनर्नियोजन या पुनर्नियुक्ति से ठीक पूर्व यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी में प्रशिक्षण में व्यतीत अवधि की गणना अर्हक सेवा के रूप में की जाएगी।

20. किसी पूर्व बीमाकर्ता के साथ की गई पिछली सेवा की गणना :—“स्थानांतरित कर्मचारी” की किसी बीमाकर्ता के साथ निरंतर सेवा की अवधि पेंशन के लिए अर्हक होगी।

परन्तु यह तब जब कि ऐसा “स्थानांतरित” कर्मचारी उस बीमाकर्ता की अपनी सेवा के संबंध में बीमाकर्ता से किसी पेंशन, बाविकी, पेंशन के बदले में उपदान या पेंशन के बदले में ऐसे अन्य अधिवर्षिता लाभ का पात्र न हो।

21. निलंबन की अवधि :—किसी कर्मचारी की निलंबन की अवधि, जिसके संबंध में जांच की जा रही हो, की गणना अर्हक सेवा के लिए की जाएगी, जहां ऐसी जांच पूरी हो जाने के पश्चात् उसे पूरी तरह विमुक्त कर दिया गया है या निलंबन को पूरी तरह अन्यायपूर्ण ठहराया गया है और अन्य मामलों में निलंबन की अवधि को तब तक अर्हक सेवा “नहीं” गिना जाएगा जब तक कि इस निमित्त निगम या किसी कंपनी के बोर्ड द्वारा बनाए गए साधारण बीमा (आवरण, अनुशासन और अपील) नियमों के अधीन आदेश पारित करने वाला सक्षम प्राधिकारी उस समय स्पष्ट रूप से यह घोषित न करे कि उसकी गणना केवल उसी सीमा तक की जाएगी जितनी सक्षम प्राधिकारी घोषणा करे।

22. सेवाकाल का समपहरण :—किसी कर्मचारी के निगम या किसी कंपनी की सेवा में त्यागपत्र देने या उसके पदच्युत किए जाने या हटाए जाने या सेवा समाप्ति या अनिवार्य सेवानिवृत्ति पर उसकी संपूर्ण पिछली सेवा समपहृत हो जाएगी और परिणामस्वरूप वह पेंशन संबंधी लाभों के लिए अर्हक नहीं होगी।

23. विदेश सेवा में प्रतिनियुक्ति की अवधि :—संयुक्त राष्ट्र या किसी अन्य विदेशी निकाय या संगठन की विदेश सेवा में प्रतिनियुक्त कर्मचारी अपने विकल्प पर,—

(क) अपनी विदेश सेवा के संबंध में पेंशन के अंशदान का संदाय कर सकता है और ऐसी सेवा की गणना इस स्कीम के अधीन अर्हक सेवा के रूप में कर सकता है; या

(ख) विदेशी नियोजन के नियमों के अधीन अनुज्ञेय सेवानिवृत्ति प्रमुविधाओं का उपभोग कर सकेगा और ऐसी सेवा की गणना इस स्कीम के अधीन अर्हक सेवा के रूप में नहीं करेगा;

परन्तु यदि कोई कर्मचारी उप पैरा (ख) के लिए विकल्प करता है तो उसे सेवानिवृत्ति प्रमुविधाएं भारत में रुपयों में ऐसी तारीख से और ऐसी रीति से संदेय की जाएंगी जिसे यथास्थिति, निगम या संबंधित कंपनी आदेश द्वारा विनिर्दिष्ट करे।

24. सैनिक सेवा :—ऐसा कर्मचारी जिसने निगम या संबंधित कंपनी में नियुक्ति या पुनर्नियोजन अथवा पुनर्नियुक्ति से पहले सेना में सेवा की है, सैनिक पेंशन, यदि कोई हो, प्राप्त करता रहेगा और सेना में कर्मचारी द्वारा की गई सेवा की गणना पेंशन के लिए अर्हक सेवा के रूप में नहीं की जाएगी।

25. भारत में किसी संगठन में प्रतिनियुक्ति की अवधि भारत में किसी अन्य संगठन में कर्मचारी की प्रतिनियुक्ति की अवधि की गणना अर्हक सेवा के रूप में की जाएगी ;

परन्तु यह तब तक कि ऐसा संगठन जिसमें वह नियुक्त है, या कर्मचारी इस स्कीम के पैरा-7 के उपपैरा (1) में विनिर्दिष्ट दरों पर पेंशन संबंधी अंशदान का निगम या संबंधित कंपनी को संदाय करे।

26. विशेष परिस्थितियों में अर्हक सेवा में परिवर्धन: कोई भी कर्मचारी अधिवर्षिता पेंशन के लिए (किंतु किसी अन्य वर्ग की पेंशन के लिए नहीं) अर्हक करने वाले अपने सेवाकाल में अपनी सेवा की एक चौथाई से अधिक या उतनी वास्तविक अवधि जितनी भर्ती के समय 28 वर्ष की आयु से अधिक हो या पांच वर्ष की अवधि, इनमें से जो भी कम हो, की वृद्धि करने का पात्र होगा किंतु यह तब जब कि वह सेवा या पद, जिस पर कर्मचारी को नियुक्त किया गया है, निम्नलिखित में से एक हो—

(क) जिसके लिए कि स्नातकोत्तर अनुसंधान या विशेषज्ञ अर्हताएं या वैज्ञानिक, प्रौद्योगिक या वृत्तिक क्षेत्रों में अनुभव आवश्यक हो; और

(ख) जिस पर अट्ठाईस वर्ष से अधिक आयु के अल्पसंख्यक सामान्यतया भर्ती किए जाते हैं; और

(ग) जिसके लिए अल्पसंख्यक को उसके पास उच्चतर अर्हताएं और अनुभव होने के कारण निगम या कंपनी द्वारा नियत अधिकतम आयु सीमा से ऊपर छूट दी गई हो।

परन्तु यह रियायत किसी कर्मचारी को तब तक अनुज्ञेय नहीं होगी जब तक कि निगम या किसी कंपनी की सेवा छोड़ने के समय उसकी वास्तविक अर्हक सेवा कम से कम दस वर्ष न हो।

परन्तु यह भी कि किसी कर्मचारी को यह रियायत तभी अनुज्ञेय होगी जब उक्त सेवा या पद के संबंध में भर्ती नियमों में विशिष्ट रूप से यह उपबंध किया गया हो कि इस सेवा या पद के लिए इस पैरा का फायदा उपलब्ध है।

27. सेवा में व्यवधान का माफ किया जाना:

(1) सेवा अभिलेख में किसी प्रतिकूल विशिष्ट अनुदेश की अनुपस्थिति में इस स्कीम में अन्तर्विष्ट विभिन्न उपबंधों के अनुसार गणना की गई सेवा सहित कर्मचारी द्वारा, यथास्थिति निगम या किसी कंपनी में की गई सेवा की दो अवधियों के बीच के व्यवधान को स्वतः माफ किया गया माना जाएगा और व्यवधान से पहले की सेवा को अर्हक सेवा माना जाएगा।

(2) उप पैरा (1) की कोई भी बात त्यागपत्र या पदच्युति, या सेवा से हटाए जाने या अनिवार्य सेवानिवृत्ति या सेवा-समाप्ति के कारण आए व्यवधान पर लागू नहीं होगी।

(3) उप पैरा (2) में उल्लिखित व्यवधान की अवधि की गणना अर्हक सेवा के रूप में नहीं की जाएगी।

28. कतिपय मामलों में स्थायी अंशकालिक आधार पर की गई सेवा की गणना:

(1) ऐसे कर्मचारी के मामले में, जो कि अपनी पूर्णकालिक नियुक्ति से ठीक पहले, स्थायी अंशकालिक आधार पर निगम या किसी कंपनी की सेवा में नियोजित या और भविष्य निधि में अंशदान कर रहा था, उसके द्वारा स्थायी अंशकालिक आधार पर की गई ऐसी सेवा की गणना अर्हक सेवा के रूप में की जाएगी;

(2) पेंशन की रकम की संगणना के प्रयोजन के लिए उप पैरा (1) में उल्लिखित कर्मचारी की अर्हक सेवा परिशिष्ट-2 के अनुसार अवधारित की जाएगी।

अध्याय 5

पेंशन के वर्ग

29. अधिवर्षिता पेंशन:—

अधिवर्षिता पेंशन ऐसे कर्मचारी को प्रदान की जाएगी जो कि साधारण बीमा (पर्यवेक्षी लिपिकवर्गीय और अधीनस्थ कर्मचारी के वेतनमान और अन्य सेवा शर्तों का सुव्यवस्थीकरण और पुनर्गठन) स्कीम, 1974 के पैरा 12 और साधारण बीमा (अधिकारियों और विकास कर्मचारिवृत्त की सेवा समाप्ति, अधिवर्षिता और सेवानिवृत्त) स्कीम, 1976 के पैरा 4 में विनिर्दिष्ट आयु प्राप्त करने पर सेवानिवृत्त हुआ हो।

30. स्वीच्छिक सेवानिवृत्ति पर पेंशन:

(1) कर्मचारी के बीस वर्ष की अर्हक सेवा पूरी कर लेने के पश्चात् किसी भी समय वह नियुक्ति प्राधिकारी को कम से कम नब्बे दिन की लिखित सूचना देकर सेवानिवृत्त हो सकेगा:

परन्तु यह उप पैरा प्रतिनियुक्ति पर कर्मचारी को तब तक लागू नहीं होगा जब तक कि वह स्थानांतरित होने पर या भारत लौटने पर भारत में उस पद का कार्यभार पुनः ग्रहण नहीं कर लेता और कम से कम एक वर्ष की सेवा पूरी नहीं कर लेता है।

परन्तु यह भी कि यह उप पैरा ऐसे कर्मचारी को लागू नहीं होगा जो ऐसे किसी स्वशासी निकाय या पब्लिक सेक्टर उपक्रम में स्थायी रूप से शामिल होने के लिए सेवानिवृत्त होता चाहता है जिसमें कि वह स्वीच्छिक सेवानिवृत्ति मांगने के समय प्रतिनियुक्ति पर हो।

(2) उप पैरा (1) के अधीन दिए गए स्वीच्छिक सेवानिवृत्ति की सूचना के लिए नियुक्ति प्राधिकारी को स्वीकृति आवश्यक होगी:

परन्तु यदि नियुक्ति प्राधिकारी उक्त सूचना में विनिर्दिष्ट अवधि की समाप्ति से पहले सेवानिवृत्ति के लिए अनुज्ञा देने से इनकार न करे तो सेवानिवृत्ति उक्त अवधि की समाप्ति की तारीख से प्रभावी हो जाएगी।

- (3) (क) उप पैरा (1) में उल्लिखित कर्मचारी नियुक्ति प्राधिकारी से उसके लिए कारण बताते हुए यह लिखित अनुरोध कर सकेगा कि स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के लिए नब्बे दिन से कम की सूचना स्वीकार कर ली जाए।

(ख) खंड (क) के अधीन अनुरोध प्राप्त होने पर नियुक्ति प्राधिकारी, उप पैरा (2) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, गुणगुण के आधार पर सूचना की नब्बे दिन की अवधि में कमी करने के अनुरोध पर विचार कर सकेगा और यदि वह इस बात से संतुष्ट है कि सूचना की अवधि में कमी करने से कोई प्रशासनिक अशुविधा पैदा नहीं होगी तो नियुक्ति प्राधिकारी इस शर्त पर नब्बे दिन की सूचना संबंधी अपेक्षा को शिथिल कर सकेगा, कि कर्मचारी सूचना के नब्बे दिन समाप्त होने से पहले अपनी पेंशन के किसी भाग के संशोध्य के लिए आवेदन नहीं करेगा।

- (4) ऐसे कर्मचारी को, जिसने इस पैरा के अधीन सेवानिवृत्त होने का विकल्प किया है और इस संबंध में नियुक्ति प्राधिकारी को आवश्यक सूचना दी है, ऐसे प्राधिकारी के विशिष्ट अनुमोदन के बिना अपनी सूचना वापस लेने से प्रदरित किया जाएगा।

परन्तु यह कि सूचना वापस लेने के लिए अनुरोध सेवानिवृत्ति की आशयित तारीख से पहले किया जाएगा।

- (5) इस पैरा के अधीन स्वैच्छिक रूप से सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी की अर्हक सेवा इस शर्त के अधीन रहते हुए अधिकतम पांच वर्ष से अधिक अवधि के लिए बढ़ाई जाएगी कि उस कर्मचारी द्वारा की गई कुल अर्हक सेवा किसी भी स्थिति में तीस वर्षों से अधिक नहीं होगी और इससे यह सेवानिवृत्ति की तारीख से आगे नहीं जाएगी।

- (6) इस पैरा के अधीन सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी की पेंशन इस स्कीम के पैरा 2 के खंड (घ) के अधीन यथा परिभाषित औसत उपलब्धियों पर आधारित होगी और वृद्धि से, जो कि उसकी अर्हक सेवा में पांच वर्ष से अधिक नहीं होगी, वह अपनी पेंशन की संगणना के लिए वेतन के काल्पनिक निर्धारण का हकदार नहीं होगा।

स्पष्टीकरण:—इस पैरा के प्रयोजन के लिए नियुक्ति प्राधिकारी इस स्कीम के परिशिष्ट 1 में विनिर्दिष्ट नियुक्ति प्राधिकारी होगा।

31. अशक्त पेंशन

- (1) ऐसे कर्मचारी को अशक्त पेंशन प्रदान की जा सकेगी,

(क) जिसने न्यूनतम दस वर्ष सेवा की हो, और
(ख) जो किसी ऐसे शारीरिक या मानसिक शैथिल्य के कारण सेवानिवृत्त हुआ है जिसने उसे सेवा के लिए स्थायी रूप से असमर्थ बना दिया है।

- (2) अशक्त पेंशन के लिए आवेदन करने वाला कर्मचारी निगम या किसी कंपनी द्वारा अनुमोदित चिकित्सा अधिकारी द्वारा दिया गया असमर्थता का चिकित्सा प्रमाणपत्र प्रस्तुत करेगा।

32. अनुकंपा भत्ता

- (1) ऐसे कर्मचारी को, जिसे सेवा में पदच्युत किया जाता है या हटाया जाता है या अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्त किया जाता है या जिसकी सेवा समाप्त की जाती है, पेंशन समग्रहृत हो जाएगी:

परन्तु पदच्युत करने या सेवा में हटाने या अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्त करने या सेवा समाप्त करने के लिए सशम प्राधिकारी ऐसी पेंशन का दावा तिहाई से अधिक अनुकंपा भत्ता मंजूर कर सकेगा, जो उसकी पदच्युति, सेवा से हटाए जाने, अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्त करने या सेवा समाप्त करने की तारीख तक की गई अर्हक सेवा के आधार पर उसे अनुज्ञेय होता, यदि—

- (i) ऐसी पदच्युति, सेवा से हटाया जगना, अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्ति या सेवा समाप्ति 1 नवम्बर, 1993 या उसके पश्चात् की गई हो; और

- (ii) मामला विशेष रूप से विचार किए जाने के योग्य हो।

- (2) उपपैरा (1) के परन्तुक के अधीन स्वीकृत अनुकंपा भत्ता इस स्कीम के पैरा 35 के अधीन सदेव न्यूनतम पेंशन की रकम से कम नहीं होगा।

33. 1-1-1986 और 31-10-1993 के बीच सेवानिवृत्त या मृत कर्मचारियों के संबंध में पेंशन या कुटुम्ब पेंशन का संदाय:

- (1) 1 जनवरी, 1986 और 31 अक्टूबर, 1993 के बीच, यथा स्थिति, निगम या किसी कंपनी की सेवा से सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी 1 नवम्बर, 1993 से पेंशन के लिए पात्र होंगे।

- (2) पैरा 3 के उपपैरा (7) में अंतर्निहित उपबंधों द्वारा शामिल मृत कर्मचारी का कुटुम्ब 1 नवम्बर, 1993 से कुटुम्ब पेंशन का पात्र होगा।

अध्याय-6

पेंशन की दर

34. पेंशन की रकम :

- (1) 1 जनवरी, 1986 और 31 जुलाई, 1987 के बीच सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के संबंध में मूल पेंशन और अतिरिक्त पेंशन को परिशिष्ट 3 में दिए गए मूल के अनुसार अक्षतन किया जाएगा ।
- (2) तैंतीस वर्षों से अधिक अर्हक सेवा पूरी करने के पश्चात् सुसंगत मुख्यवस्थीकरण स्कीम के उपबन्धों के अनुसार सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी के मामले में मूल पेंशन की रकम की संगणना औसत परिलब्धियों के पचास प्रतिशत पर की जाएगी ।
- (3) (क) अतिरिक्त पेंशन, कर्मचारी द्वारा अपनी सेवा के अंतिम दस मासों के दौरान प्राप्त किए गए भत्तों का पचास प्रतिशत होगी ।
(ख) अतिरिक्त पेंशन की रकम पर कोई महंगाई राहत नहीं दी जाएगी ।

स्पष्टीकरण:—इस उप पैरा के प्रयोजन के लिए “भत्तों” से वे भत्ते अभिप्रेत हैं जो केवल निम्नलिखित प्रयोजनों के लिए गिनी जाने वाली सीमा तक अनुज्ञेय है, अर्थात्:—

- (i) भविष्य निधि में अंशदान करना,
- (ii) मकान किराया भत्ता देना,
- (iii) उपदान का संवाय करना, और
- (iv) प्रोन्नति पर वेतन का पुनः नियतन ।
- (4) उपर्युक्त उप पैरा (2) और उप पैरा (3) के योग से परिकलित पेंशन इस स्कीम में विनिर्दिष्ट न्यूनतम पेंशन के अधीन रहते हुए होगी ।
- (5) ऐसे कर्मचारी को जिसने इस स्कीम के पैरा 40 के उपबन्धों के अनुसार अपनी पेंशन के अनुज्ञेय भाग का संराणीकरण करवाया है, प्रत्येक मास पेंशन का केवल अतिशेष ही प्राप्त होगा ।
- (6) (क) तैंतीस वर्षों की अर्हक सेवा पूरी करने से पहले किन्तु दस वर्षों की अर्हक सेवा पूरी करने के पश्चात् सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी के मामले में पेंशन की रकम उप-पैरा (2) और उप-पैरा (3) के अधीन अनुज्ञेय पेंशन की रकम के अनुपात में होगी और किसी भी स्थिति में पेंशन की रकम इस स्कीम में विनिर्दिष्ट न्यूनतम पेंशन की रकम से कम नहीं होगी ।
(ख) इस स्कीम में किसी बात के होने हुए भी, अशक्त पेंशन की रकम कुटुम्ब पेंशन की

उस सामान्य दर से कम नहीं होगी, जो सेवाकाल में मृत्यु होने पर उसके कुटुम्ब को मंदाय होती ।

- (7) इस पैरा के अधीन अंतिम रूप से अवधारित पेंशन की रकम पूर्ण रूप में व्यक्त की जाएगी और यदि पेंशन में रूप का कोई भाग हो तो इसे अगले उच्चतर रूप में पूर्णकृत किया जाएगा ।

35. न्यूनतम पेंशन:—

न्यूनतम पेंशन की रकम निम्न प्रकार होगी—

- (क) 1 नवम्बर, 1993 से पहले सेवानिवृत्त हुए कर्मचारी के मामले में तीन सौ पचहत्तर रूप (375 रूप) प्रति मास, और
(ख) 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी के मामले में सात सौ बीस रूप (720 रूप) प्रति मास ।

36. महंगाई राहत

- (1) मूल पेंशन या कुटुम्ब पेंशन या अशक्त पेंशन या अनुकंपा भत्ते पर महंगाई राहत परिशिष्ट 4 में विनिर्दिष्ट दरों के अनुसार मंजूर की जाएगी ।
- (2) महंगाई राहत, संराणीकरण के पश्चात् भी पूर्ण मूल पेंशन पर अनुज्ञात की जाएगी ।

37. औसत उपलब्धियों के लिए दस मास की अवधि का अवधारण:

- (1) औसत उपलब्धियों के प्रयोजन के लिए पूर्ववर्ती दस मास की अवधि की गणना सेवानिवृत्ति की तारीख से की जाएगी ।
- (2) स्वीच्छिक सेवानिवृत्ति के मामले में, औसत उपलब्धियों के प्रयोजन के लिए पूर्ववर्ती दस मास की अवधि की गणना उस तारीख से की जाएगी जिसको कर्मचारी स्वीच्छिक रूप से सेवानिवृत्त हुआ है ।
- (3) पदच्युति या सेवा से हटाए जाने या अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्ति या सेवा समाप्ति के मामले में औसत परिलब्धियों के प्रयोजन के लिए पूर्ववर्ती दस मास की अवधि की गणना निगम या कंपनी में उसकी पदच्युति या सेवा से हटाए जाने या अनिवार्य सेवानिवृत्ति या सेवा समाप्ति की तारीख से की जाएगी ।
- (4) यदि सेवा के अंतिम दस मासों के दौरान कर्मचारी बिना वेतन असाधारण छुट्टी पर ड्यूटी से अनुपस्थित रहा हो या निलंबित रहा हो और उस अवधि की गणना सेवा के रूप में नहीं की गई हो तो औसत उपलब्धियों की गणना करते समय

असाधारण छुट्टी या निलंबन की उक्त अवधि को हिसाब में नहीं लिया जाएगा और दस मास से पहले की उतनी अवधि उसमें सम्मिलित कर दी जाएगी।

अध्याय-7

कुटुम्ब पेंशन

38. कुटुम्ब पेंशन:—(1) इस स्कीम में अन्तर्विष्ट उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना यदि कर्मचारी की मृत्यु निम्नलिखित स्थितियों में हुई हो:—

- (क) एक वर्ष की निरन्तर सेवा पूरी होने के पश्चात्, या
- (ख) एक वर्ष की निरन्तर सेवा पूरी होने से पहले, परन्तु यह तब जबकि संबंधित मृत कर्मचारी की सेवा में या पद पर नियुक्ति होने से ठीक पहले निगम या कम्पनी द्वारा अनुमोदित चिकित्सा अधिकाारी द्वारा जांच की गई हो और उसे यथा-स्थिति, निगम या किसी कम्पनी, में नियोजन के लिए उपयुक्त घोषित किया गया हो, या
- (ग) सेवानिवृत्ति के पश्चात् और मृत्यु की तारीख को वह पेंशन या अनुकंपा भत्ता पा रहा हो, तो मृत कर्मचारी का कुटुम्ब, कुटुम्ब पेंशन का हकदार होगा जिसकी रकम का अवधारण परिशिष्ट-5 के अनुसार किया जाएगा।

(2) कुटुम्ब पेंशन की रकम मासिक दरों पर नियत की जाएगी और पूर्ण रूप में व्यक्त की जाएगी और जहां कुटुम्ब पेंशन में रुपये का कोई भाग हो तो उसे अगले उच्चतर रूप में पूर्णांकित किया जाएगा :

परन्तु किसी भी दशा में कुटुम्ब पेंशन इस स्कीम के अधीन विहित अधिकतम पेंशन से अधिक नहीं होगी।

(3) (क) (1) जहां किसी कर्मचारी की जो कि कर्मकार प्रतिकर अधिनियम 1923 (1923 का 8) से शासित नहीं होता है, कम से कम सात वर्ष की निरन्तर सेवा करने के पश्चात् सेवाकाल में मृत्यु हो जाती है तो कुटुम्ब को संदेय कुटुम्ब पेंशन की दर आहरित अंतिम वेतन के पचास प्रतिशत या उप-पैरा (1) के अधीन अनुज्ञेय कुटुम्ब पेंशन के दुगुने, इनमें जो भी कम हो, के बराबर होगी और इस प्रकार अनुज्ञेय रकम कर्मचारी की मृत्यु की तारीख के बाद की तारीख से सात वर्ष की अवधि के लिए या उस तारीख तक की अवधि के लिए, जिस तारीख को मृत कर्मचारी यदि वह जीवित रहा होता तो 65 वर्ष की आयु का हो जाता, इनमें जो भी कम हो, संदेय होगी;

(2) सेवानिवृत्ति के पश्चात् कर्मचारी की मृत्यु होने की दशा में इस उप-पैरा के खण्ड (क) या खण्ड (ख) के अधीन

यथाअवधारित कुटुम्ब पेंशन, सात वर्ष की अवधि के लिए या उस तारीख तक की अवधि के लिए जिस तारीख को मृत कर्मचारी यदि वह जीवित रहा होता तो 65 वर्ष की आयु का हो जाता, इनमें से जो भी कम हो, संदेय होगी।

(ख) (1) जहां कोई किसी कर्मचारी को जो कि कर्मकार प्रतिकर अधिनियम, 1923 (1923 का 8) से शासित होता हो, सात वर्ष की निरन्तर सेवा करने के पश्चात् सेवाकाल में मृत्यु हो जाती है तो कुटुम्ब पेंशन की दर अंतिम आहरित वेतन के पचास प्रतिशत या उप-पैरा (1) के अधीन अनुज्ञात कुटुम्ब पेंशन के डेढ़ गुणे, इनमें जो भी कम हो, के बराबर होगी,

(2) उपखण्ड (1) के अधीन इस प्रकार अवधारित कुटुम्ब पेंशन खण्ड (क) में उल्लिखित अवधि के लिये संदेय होगी,

(ग) खण्ड (क) में निर्दिष्ट अवधि समाप्त होने के पश्चात् वह कुटुम्ब, जिसे उस खण्ड या खण्ड (ख) के अधीन कुटुम्ब पेंशन मिल रही हो, उप-पैरा (1) के अधीन अनुज्ञेय दर पर कुटुम्ब पेंशन का हकदार होगा।

(4) इस स्कीम में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, यदि जहां किसी मृत कर्मचारी का कुटुम्ब पैरा 3 के उप-पैरा (5) के अनुसार पेंशन का विकल्प करता है या पैरा 3 के उपपैरा (6) या (7) या (8) में अन्तर्विष्ट उपबंधों द्वारा शासित होता है, तो मृत कर्मचारी का कुटुम्ब इस स्कीम के अधीन कुटुम्ब पेंशन का पात्र होगा।

39. कुटुम्ब पेंशन के संदाय की अवधि:—(1) जिस अवधि के लिए कुटुम्ब पेंशन संदेय हो, वह अवधि—

- (क) विधवा या विधूर के दशा में मृत्यु या पुनर्विवाह की तारीख तक, इनमें जो भी पहले हो,
- (ख) पुत्र के दशा में, जब तक कि वह 25 वर्ष की आयु का नहीं हो जाता, और
- (ग) अविवाहित पुत्री की दशा में, जब तक कि वह 25 वर्ष की आयु की नहीं हो जाती या जब तक कि उसका विवाह नहीं हो जाता, इनमें जो भी पहले हो, होगी;

परन्तु यदि किसी कर्मचारी का पुत्र या पुत्री किसी मानसिक विकार या निःशक्तता से पीड़ित हो या शारीरिक रूप से विकलांग या निःशक्त हो, जिससे कि वह पच्चीस वर्ष की आयु का होने के बाद भी जीविकोपार्जन में असमर्थ हो तो ऐसे पुत्र या ऐसी पुत्री को आजीवन कुटुम्ब पेंशन निम्नलिखित शर्तों के अधीन दी जाएगी, अर्थात्:—

- (i) यदि ऐसा पुत्र या ऐसी पुत्री कर्मचारी की दो या अधिक संतान में से एक होती आरम्भ में कुटुम्ब पेंशन का संदाय उप-पैरा (1) के खण्ड (क) में

निर्धारित क्रम में अवयस्क संतान को तब तक किया जाएगा जब तक कि अन्तिम अवयस्क संतान पच्चीस वर्ष की आयु की नहीं हो जाती और तत्पश्चात् कुटुम्ब पेंशन, मानसिक विकार या निःशक्तता से पीड़ित या शारीरिक रूप से विकलांग या निःशक्त पुत्र या पुत्री के पक्ष में पुनः प्रारम्भ की जाएगी और उसे आजीवन संदेय होगी,

- (ii) यदि मानसिक विकार या निःशक्तता से पीड़ित एक से अधिक संतान हों या जो शारीरिक रूप से विकलांग या निःशक्त हों तो उनकी जन्म तारीख के क्रम में पेंशन का संदाय किया जाएगा और उनमें से छोटी संतान को कुटुम्ब पेंशन मिलेगी जब कि उससे ठीक बड़ी संतान की पात्रता समाप्त नहीं हो जाती:

परन्तु जहां कुटुम्ब पेंशन उक्त जुड़वां संतान को संदेय हो तो इसका संदाय उपपैरा (1) के खण्ड (च) में दी गई रीति से किया जाएगा,

- (iii) उन मामलों के सिवाए, जिसमें शारीरिक रूप से विकलांग पुत्र या पुत्री वयस्क हो गया/गई हो, ऐसे पुत्र या पुत्री को संरक्षक के माध्यम से कुटुम्ब पेंशन का संदाय इस प्रकार किया जाएगा मानो वह अवयस्क हो,
- (iv) उक्त ऐसे किसी पुत्र या पुत्री का आजीवन कुटुम्ब पेंशन मंजूर करने से पहले सक्षम प्राधिकारी यह समाधान करेगा कि विकलांगता की प्रकृति ऐसी है कि वह अपनी जीविका उपाजित करने में असमर्थ है और इसके लिए निगम या किसी कम्पनी द्वारा अनुमोदित चिकित्सा अधिकारी का प्रमाणपत्र जिसमें यथासंभव संतान की सही शारीरिक या मानसिक स्थिति बताई गई होगी, लिया जाएगा,
- (v) ऐसे पुत्र या ऐसी पुत्री के संरक्षक के रूप में कुटुम्ब पेंशन प्राप्त करने वाला व्यक्ति या संरक्षक के माध्यम से कुटुम्ब पेंशन नहीं लेने वाला पुत्र या पुत्री प्रत्येक तीसरे वर्ष निगम या सम्बद्ध कम्पनी द्वारा अनुमोदित चिकित्सा अधिकारी से इस आशय का एक प्रमाणपत्र प्रस्तुत करेगा कि वह अब भी मानसिक विकार या निःशक्तता से पीड़ित है या अब भी शारीरिक रूप से विकलांग या निःशक्त है।

स्पष्टीकरण :

इस उपपैरा में विनिर्दिष्ट आयु सीमा से अधिक निःशक्त संतानों को कुटुम्ब पेंशन की मंजूरी निम्नलिखित शर्तों के अधीन दी जाएगी, अर्थात्:—

(i) इस उपपैरा के अधीन पुत्री का विवाह हो जाने पर, विवाह हो जाने की तारीख से कुटुम्ब पेंशन के लिए अपात्र बन जाएगी,

(2) यदि ऐसा पुत्र या ऐसी पुत्री अपनी जीविका उपाजित करने लग जाता/जाती है तो उसे संदेय कुटुम्ब पेंशन बंद कर दी जाएगी। ऐसे मामले में संरक्षक या पुत्र या पुत्री का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रत्येक मास निगम या सम्बद्ध कम्पनी, यथास्थिति, प्रत्येक मास यह प्रमाणपत्र दे कि—

- (क) उसने जीविकोपार्जन करना आरंभ नहीं किया है,
- (ख) पुत्री की दशा में कि उसका अभी तक विवाह नहीं हुआ है;
- (घ) यदि मृत कर्मचारी या पेंशनभोगी का/की विधवा या विधुर हो तो कुटुम्ब पेंशन विधवा या विधुर को संदेय होगी और ऐसा न होने पर पात्र संतान को संदेय होगी;
- (ङ) संतान को कुटुम्ब पेंशन उनकी जन्म की तारीख के क्रम में संदेय होगी और उनमें से छोटी संतान तब कुटुम्ब पेंशन के लिए पात्र होगी जब कि उससे पहले वाली बड़ी संतान कुटुम्ब पेंशन पाने के लिए अपात्र हो जाती है,

परन्तु जहां कुटुम्ब पेंशन का संदाय जुड़वा संतान को किया जाता है वहां इसका संदाय उपपैरा (1) के खण्ड (च) में वर्णित रीति से किया जाएगा,

- (च) जहां कुटुम्ब पेंशन का संदाय जुड़वा संतान को किया जाना है वहां ऐसी संतान को इसका संदाय बराबर बराबर भाग में किया जाएगा:

परन्तु जहां इस प्रकार किसी एक संतान की पात्रता नहीं रहती है, तो उसका भाग दूसरी संतान को दे दिया जाएगा और जहां दोनों संतानों की पात्रता नहीं रहती है वहां कुटुम्ब पेंशन यथास्थिति अगली पात्र संतान या जुड़वां संतान को दी जाएगी।

(2) जब मृत कर्मचारी या पेंशन भोगी के एक से अधिक संतान छोड़ जाता है तो ज्येष्ठतम पात्र संतान उपपैरा (1) के यथास्थिति खण्ड (ख) या (ग) में दी गई अवधि के लिए कुटुम्ब पेंशन का हक्दार होगा और उस अवधि की समाप्ति पर उसके ठीक छोटी पर अगली संतान कुटुम्ब पेंशन की मंजूरी के लिए पात्र होगी।

(3) जहां कुटुम्ब पेंशन उस पैरा के अधीन किसी अवयस्क को मंजूर की जाती है, वहां वह संदाय अवयस्क की ओर से संरक्षक को संदेय होगी।

(4) उस दशा में जब पति और पत्नी दोनों निगम या सम्बद्ध कम्पनी के कर्मचारी हों और इस स्कीम के उपबंधों द्वारा शासित हों और उनमें एक की मृत्यु सेवा काल में या सेवानिवृत्ति पर हो जाती है तो मृत कर्मचारी के मामले में कुटुम्ब पेंशन यथा-स्थिति उत्तरजीवी पति या पत्नी को संदेय होगी और पति या पत्नी की मृत्यु होने पर मृत माता पिता के संबंध में उत्तरजीवी या संतान को दो कुटुम्ब पेंशनों की मंजूरी नीचे विनिर्दिष्ट सीमाओं के अधीन रहते हुए की जाएगी, अर्थात:-

(क) यदि उत्तरजीवी संतान पैरा 38 के उपपैरा (3) के खण्ड (क) के उपखंड (1) या खंड (ख) के उपखंड (i) में उल्लिखित दरों पर दो कुटुम्ब पेंशनों को पाने के लिए पात्र हैं तो कर्मचारी के 1 नवम्बर, 1993 के पहले सेवानिवृत्त होने या सेवा काल में उसकी मृत्यु हो जाने की स्थिति में दोनों पेंशनों की रकम केवल दो हजार पांच सौ रुपए प्रतिमास तक सीमित होगी और ऐसे कर्मचारी के मामले में जिसकी 1 नवम्बर, 1993 या उसके पश्चात सेवानिवृत्त हो गए थे या उनकी मृत्यु हो गई थी, पेंशनों की रकम केवल चार हजार आठ सौ रुपए प्रतिमास तक सीमित होगी।

(ख) यदि पैरा 38 के उपपैरा (3) के खंड (क) के उपखंड (i) या खण्ड (ख) के उपखंड (ii) में उल्लिखित दरों पर एक कुटुम्ब पेंशन किसी को संदेय नहीं रहती है और उसके बदले में पैरा 38 के उप पैरा (i) में उल्लिखित दरों पर कुटुम्ब पेंशन संदेय हो जाती है तो उस कर्मचारी की बाबत जो 1 नवम्बर, 1993 के पूर्व सेवानिवृत्त हो गया था या सेवाकाल में उसकी मृत्यु हो गई थी, दोनों पेंशनों की अधिकतम रकम जो केवल दो हजार पांच सौ रुपए प्रतिमास तक सीमित होगी और ऐसे कर्मचारी के मामले में जो 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात सेवानिवृत्त हो गया था या उसकी मृत्यु हो गई थी, यह रकम अधिकतम चार हजार आठ सौ रुपए प्रतिमास तक सीमित होगी।

(ग) यदि पैरा 38 के उप पैरा (1) में उल्लिखित दरों पर दोनों कुटुम्ब पेंशन संदेय रहती है तो कर्मचारी के 1 नवम्बर, 1993 के पूर्व सेवानिवृत्त होने या सेवाकाल में होते हुए उसकी मृत्यु होने की दशा में पेंशन की अधिकतम रकम एक हजार बी सौ पचास रुपए प्रतिमास तक सीमित होगी और उस कर्मचारी की बाबत जो 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात सेवानिवृत्त या मृत्यु होती है तो कुटुम्ब पेंशन की रकम दो हजार चार सौ रुपए प्रतिमास तक सीमित होगी।

(5) (क) जहां कुटुम्ब पेंशन एक से अधिक विधवाओं को संदेय होती है तो कुटुम्ब पेंशन का सभी विधवाओं को बराबर-बराबर भाग संदाय किया जाएगा।

(ख) किसी विधवा की मृत्यु होने पर उसके हिस्से की कुटुम्ब पेंशन उसकी मात्र संतान को संदेय होगी।

परन्तु यदि विधवा के कोई उत्तरजीवी संतान नहीं हो तो उसके हिस्से की कुटुम्ब पेंशन व्यपगत नहीं होगी, अर्थात्

वह अन्य विधवाओं को बराबर-बराबर भागों में संदेय होगी और यदि इस प्रकार की केवल एक ही विधवा जीवित रहती है तो पेंशन की सम्पूर्ण रकम उसे संदेय होगी,

(ग) यदि मृत कर्मचारी या पेंशनभोगी की एक ही विधवा हो किन्तु उसकी दूसरी पत्नी से जो जीवित नहीं है उसकी पात्र संतान जीवित हो, तो पात्र संतान कुटुम्ब पेंशन के उस भाग के लिए पात्र होंगे जो कर्मचारी या पेंशनभोगी की मृत्यु के समय उसकी या उनकी माता को यदि वह जीवित होती को मिलता।

परन्तु यह कि इस प्रकार की संतान या विधवा या विधवाओं को कुटुम्ब के अंग या अंगों का संदाय नहीं रहता है तो वह रकम व्यपगत नहीं होगी बल्कि वह दूसरी विधवा/विधवाओं पर दूसरी संतान को जो इसके लिए अन्यथा पात्र होंगे, बराबर हिस्सों में संदेय होगी या यदि केवल एक ही विधवा या संतान हो तो उसे पूरी रकम संदेय होगी।

(घ) जहां कुटुम्ब पेंशन जुड़ा संतान को संदेय हो तो इसका संदाय उपर्युक्त उप पैरा (1) के खण्ड (च) में विनिर्दिष्ट रीति से किया जाएगा।

(ङ) इस उपपैरा में यथा उपबंधित के सिवाय, कुटुम्ब पेंशन एक समय में कुटुम्ब के एक से अधिक सदस्यों को संदेय नहीं होगी।

(6) जहां कोई महिला कर्मचारी या पुरुष कर्मचारी न्यायिक रूप से अलग किया गया जीवित पति या पत्नी पोछे छोड़ जाता हो और कोई संतान न हो वहां मृतक की बाबत कुटुम्ब पेंशन जीवित व्यक्ति को संदेय होगी:

परन्तु जहां न्यायिक रूप से अलग-थलग जारकम के आधार पर मंजूर किया जाता है और कर्मचारी की मृत्यु इस प्रकार के न्यायिक अलग-थलग के दौरान होती है, तो जारकम के लिए सिद्धांत पाए गए जीवित व्यक्ति को कुटुम्ब पेंशन संदेय नहीं होगी।

(7) (क) जहां किसी महिला या पुरुष कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है और वह अपने पोछे अलग हुआ पति या विधवा छोड़ जाता है/छोड़ जाती है जिसकी कोई संतान हो वहां मृत कर्मचारी को बाबत संदेय कुटुम्ब पेंशन उत्तरजीवी व्यक्ति को संदेय होगी परन्तु वह तब जब कि वह ऐसी संतान का संरक्षक हो,

(ख) जहां उत्तरजीवी व्यक्ति ऐसी संतान का संरक्षक नहीं रह गया हो वहां कुटुम्ब पेंशन इस प्रकार की संतान के वास्तविक संरक्षक को संदेय होगी।

(8) यदि कुटुम्ब पेंशन के लिए पात्र पुत्र या अविवाहित पुत्री अठारह वर्ष की हो जाती है तो कुटुम्ब पेंशन का संदाय सीधे ऐसे पुत्र या अविवाहित पुत्री को किया जाएगा।

(9) (क) यदि कर्मचारी की सेवाकाल में मृत्यु की स्थिति में, इस स्कीम के अधीन कुटुम्ब पेंशन प्राप्त करने के लिए पात्र किसी व्यक्ति पर कर्मचारी की हत्या करने का या

इस प्रकार के अपराध के लिए दुरुप्रेरित करने का आरोप लगाया जाता है, तो कुटुम्ब के अन्य पाल सदस्य या सदस्यों सहित ऐसे व्यक्ति के कुटुम्ब पेंशन प्राप्त करने के दावे को उसके विरुद्ध संस्थान डांडिक कार्यवाहियों समाप्त होने तक निलंबित रखा जाएगा,

(ख) यदि उपरोक्त खण्ड (क) में निर्दिष्ट डांडिक कार्यवाहियों के समाप्त होने पर, संबंध व्यक्ति—

(i) कर्मचारी की हत्या करने या हत्या करने के लिए दुरुप्रेरित करने के लिए सिद्ध दोष ठहराया जाता है तो उसे कुटुम्ब पेंशन से विवर्जित कर दिया जाएगा और कर्मचारी की मृत्यु की तारीख से कुटुम्ब पेंशन के अन्य पाल सदस्य को संदेय होगी,

(ii) कर्मचारी की हत्या या हत्या करने के लिए दुरुप्रेरित करने के अपराध में दोषमुक्त किया जाता है तो ऐसे व्यक्ति को कर्मचारी की मृत्यु की तारीख से, कुटुम्ब पेंशन संदेय होगी,

(ग) उपरोक्त उपखण्ड (क) और उपखण्ड (ख) के उपबंध, किसी कर्मचारी की सेवानिवृत्ति के पश्चात् उसकी मृत्यु पर संदेय होने वाली कुटुम्ब पेंशन पर भी लागू होंगे।

अध्याय-8

संराशीकरण

40. संराशीकरण—(1) कोई कर्मचारी एक मुश्त संदाय के लिए अपनी पेंशन के एक तिहाई भाग से अतिरिक्त भाग के संराशीकरण के लिए हकदार होगा।

परंतु इस स्कीम के पैरा 3 के उपपैरा (5) द्वारा शासित किसी कर्मचारी की बावत, ऐसे कर्मचारी का कुटुम्ब भी कर्मचारी को अनुज्ञात पेंशन के एक मुश्त संदाय के लिए एक तिहाई भाग से अतिरिक्त भाग के संराशीकरण के लिए हकदार होगा।

(2) कर्मचारी अपनी इच्छानुसार पेंशन के भाग के संराशीकरण के लिए संकेत करेगा, संराशीकरण के लिए या तो वह अधिकतम सीमा एक तिहाई भाग का उल्लेख कर सकता है अथवा जितना वह इच्छुक हो इससे कम सीमा तक संराशीकरण करा सकता है।

(3) यदि संराशीकरण के लिए निकाला गया कोई भाग एक रुपए का अंश हो तो संराशीकरण के प्रयोजन के लिए इसे छोड़ दिया जाएगा।

(4) किसी आवेदक को देय एक मुश्त रकम की संगणना तब तक नहीं सारणी के प्रत्येक की जाएगी:—

सारणी

एक रुपया प्रतिवर्ष की पेंशन के लिए संराशीकरण मूल्य

अगली जन्मतिथि पर आयु	वर्ष की क्रय संख्या के रूप में अभिव्यक्त संगशीकरण मूल्य	अगली जन्म- तिथि पर आयु	वर्ष की क्रय संख्या के रूप में अभिव्यक्त संगशीकरण मूल्य
17	19.28	51	12.95
18	19.20	52	12.66
19	19.11	53	12.35
20	19.01	54	12.05
21	18.91	55	11.73
22	18.81	56	11.42
23	18.70	57	11.10
24	18.59	58	10.78
25	18.47	59	10.46
26	18.34	60	10.13
27	18.21	61	09.81
28	18.07	62	09.48
29	17.94	63	09.15
30	17.78	64	08.82
31	17.62	65	08.50
32	17.46	66	08.17
33	17.29	67	07.85
34	17.11	68	07.53
35	16.92	69	07.22
36	16.72	70	06.91
37	16.52	71	06.60
38	16.31	72	06.30
39	16.09	73	06.01
40	15.87	74	05.72
41	15.64	75	05.44
42	15.40	76	05.17
43	15.15	77	04.90
44	14.90	78	04.65
45	14.64	79	04.40
46	14.37	80	04.17
47	14.10	81	03.94
48	13.82	82	03.72
49	13.54	83	03.52
50	13.25	84	03.32
		85	03.13

टिप्पणी—(1) उपर्युक्त सारणी पेंशन भोगी की अगली जन्म- तिथि पर उसकी आयु के संदर्भ में वर्ष की क्रय संख्या के रूप में अभिव्यक्त पेंशन संराशीकरण मूल्य दर्शाती है।

अट्टायन वर्ष की आयु पर सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी के मामले में संराशीकृत मृत्यु 10.46 वर्ष का क्रय है, और यदि वह अपनी सेवा निवृत्ति से एक वर्ष के भीतर अपनी मासिक पेंशन से 100/- रुपए संराशीकृत करवाता है तो उसे देय एक मुश्त राशि $₹ 100 \times 12 \times 10.46 = 12552$ रुपए होती है।

(2) कोई कर्मचारी जिसने अपनी पेंशन के अनुज्ञात अंश का संराशीकरण करवाया हो, वह संराशीकरण की तारीख से पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात् संराशीकृत भाग की पेंशन को पुनः प्राप्त करने का हकदार हो जाएगा।

(3) कोई आवेदक जो अधिवर्षिता पेंशन, स्वेच्छिक सेवानिवृत्ति पेंशन, अशक्त पेंशन या अनुकंपा भत्ता के लिए प्राधिकृत है वह इस स्कीम के अधीन अपनी पेंशन के अंश का संराशीकरण कराने का हकदार होगा।

(4) पेंशन भोगी के अधिवर्षिता के समय पर सेवानिवृत्त होने या स्वेच्छिक रूप से सेवानिवृत्त होने के मामले में, यदि आवेदक संराशीकरण के लिए सेवानिवृत्ति से एक वर्ष के भीतर आवेदन देना है तो उसके लिए चिकित्सीय जांच आवश्यक नहीं होगी। तथापि, यदि ऐसा पेंशन भोगी सेवा निवृत्ति के एक वर्ष के पश्चात् पेंशन के संराशीकरण के लिए आवेदन करता है तो उसकी अनुमति चिकित्सीय परीक्षा के अधीन होगी। स्पष्टीकरण कोई आवेदक जो—

(i) इस स्कीम के पैरा 21 के अधीन अशक्त पेंशन पर सेवा निवृत्त होता है, या

(ii) इस स्कीम के पैरा 32 के अधीन अनुकंपा भत्ता प्राप्त करता है, वह उपपैरा (1) में विनिर्दिष्ट सीमा के अधीन रहते हुए पेंशन के किसी अंश का संराशीकरण करने के लिए तभी पात्र होगा जब निगम या संबंधित कंपनी द्वारा अनुमोदित किसी चिकित्सा अधिकारी द्वारा उसे ठीक स्वास्थ्य वाला घोषित कर दिया जाय।

(5) ऐसे किसी कर्मचारी के मामले में पेंशन का संराशीकरण पूर्ण होगा—

(क) जो अधिवर्षिता या स्वेच्छिक आधार पर सेवा निवृत्ति की तारीख के एक वर्ष के पूर्व पेंशन के संराशीकरण के लिए आवेदन दे देता है:

परन्तु यह कि पैरा 30 के उपनियम (3) द्वारा शासित कर्मचारी अपनी पेंशन के किसी भाग के संराशीकरण के लिए नब्बे दिन की सूचना की अवधि समाप्त होने से पूर्व आवेदन नहीं कर सकता और पेंशन का संराशीकरण पैरा 30 के उपनियम (1) में दी गई सूचना की अवधि के समाप्त होने के पश्चात् पूर्ण होगी।

(ख) अधिवर्षिता पर या स्वेच्छिक सेवा निवृत्ति पर सेवा निवृत्ति की तारीख के पश्चात् किन्तु सेवा निवृत्त होने की तारीख से एक वर्ष के भीतर यदि वह पेंशन के संराशीकरण के लिए आवेदन करता

है तो मध्यम प्राधिकारी द्वारा संराशीकरण के लिए आवेदन प्राप्त किए जाने की तारीख को;

(ग) अधिवर्षिता या स्वेच्छिक सेवा निवृत्ति पर यदि वह संराशीकरण के लिए एक वर्ष पश्चात् आवेदन करता है तो निगम या किसी कंपनी द्वारा अनुमोदित चिकित्सा अधिकारी द्वारा चिकित्सीय प्रमाणपत्र देने की तारीख को;

(घ) जो 1 नवंबर, 1993 के पहले सेवा निवृत्त हो चुका है और जो 1 नवंबर, 1993 को इस स्कीम के अधीन शासित होने का विकल्प करता है, पैरा 3 के उपपैरा (1) के खंड (ख) द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर जहां संराशीकरण के लिए आवेदन किया गया है;

(ङ) जो 1 नवंबर, 1993 को या उसके पश्चात् निगम या किसी कंपनी की सेवा में थे किन्तु जो इस स्कीम के प्रकाशन के पूर्व सेवा निवृत्त हो गए हों, वहां उसके सेवा निवृत्त होने की तारीख के तत्काल पश्चात् के दिन को, जहां आवेदन पैरा 3 के उपपैरा (2) के खंड (ख) में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर आवेदन दिया गया हो;

(च) जो 1 नवंबर, 1993 को या उसके पश्चात् सेवानिवृत्त हो गया हो किन्तु अधिसूचित तारीख से पूर्व मृत कर्मचारी को उसकी सेवानिवृत्ति की तारीख के ठीक पश्चात् के दिन, जहां मृत कर्मचारी के कुटुंब द्वारा पैरा 3 के उपपैरा (5) के खंड (क) में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर संराशीकरण के लिए आवेदन किया गया हो;

(छ) जिन मामलों में पैरा 31 के अधीन अशक्त पेंशन या निगम 32 के अधीन अनुकंपा भत्ता अनुज्ञेय है उन मामलों में संराशीकरण निगम या संबंधित द्वारा अनुमोदित चिकित्सा अधिकारी द्वारा दिए गए चिकित्सीय प्रमाणपत्र की तारीख को पूर्ण होगा।

अध्याय 9

सामान्य शर्तें

41. पेंशन, भविष्य में आचरण अर्थात् बने रहने के अधीन होगी :—

इस स्कीम के अधीन पेंशन की प्रत्येक मंजूरी और उसे जारी रखने की एक विवक्षित शर्त यह होगी कि भविष्य में अर्थात् आचरण बना रहे।

42. पेंशन रोकना या प्रत्याहृत करना :—यदि कोई पेंशन-भोगी किसी गंभीर अपराध के लिए सिद्ध दोष ठहराया गया है या किसी गंभीर अवचर का दोषी पाया गया है तो सक्षम प्राधिकारी पेंशन या उसके किसी भाग को, लिखित आदेश द्वारा स्थायी रूप से या किसी विनिर्दिष्ट अवधि के लिए रोक सकेगा या प्रत्याहृत कर सकेगा :

परन्तु यह कि पेंशन का कोई भाग रोक लिया जाए या प्रत्याहृत किया जाए वहां ऐसी पेंशन की रकम इतनी कम नहीं की जाएगी कि वह इस स्कीम के अधीन संदेय न्यूनतम पेंशन राशि से कम हो।

43. न्यायालय द्वारा दोषसिद्धि : जहां कोई पेंशन भोगी किसी न्यायालय द्वारा किसी गंभीर अपराध के लिए सिद्ध दोष ठहराया गया हो वहां कारंवाई न्यायालय के ऐसी दोषसिद्धि से संबंधित निर्णय की ध्यान में रखकर की जाएगी।

44. गंभीर अवचार के लिए दोषी पेंशनभोगी :— किसी ऐसे मामले में जो पैरा 43 के अन्तर्गत न आता हो, यदि सक्षम प्राधिकारी यह समझता है कि पेंशनभोगी गंभीर अवचार का प्रथम दृष्टया दोषी के तो कोई आदेश पारित करने में पूर्व वह निगम या कंपनी के बोर्ड द्वारा विरचित साधारण बीमा (आचरण अनुशासन और अपील) नियम में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया का अनुसरण करेगा।

45. अन्तिम पेंशन : (1) कोई ऐसा कर्मचारी जो अधिवार्षिता की आयु प्राप्त करने पर या अन्यथा सेवानिवृत्त हुआ हो और जिसके विरुद्ध कोई विभागीय या न्यायिक कार्यवाहियां संस्थित की गई हों या जहां विभागीय कार्यवाही जारी रखी गई हों, वहां ऐसी कार्यवाहियों के समाप्त होने पर उसको अनुज्ञेय अधिकतम पेंशन के बराबर अन्तिम पेंशन की अनुमति उसे अनुज्ञात किए जाने वाले सेवानिवृत्त क्रायवों से समायोजन के अधधीन दी जाएगी किन्तु यदि अन्तिम रूप से निर्धारित पेंशन अन्तिम पेंशन से कम है या पेंशन को स्थायी रूप में या किसी विनिर्दिष्ट अवधि के लिए कम कर दिया गया हो या रोक लिया गया हो तो कोई वसूली नहीं की जाएगी।

(2) ऐसे मामलों में उपदान का संदाय तब तक नहीं किया जाएगा जब तक उसके विरुद्ध चल रही कार्यवाहियों समाप्त नहीं हो जाती हैं। उपदान का संदाय कार्यवाहियों के समाप्त हो जाने पर कार्यवाहियों के निर्णय के अधीन किया जाएगा। किसी भी कर्मचारी से वसूल की जाने वाली धनराशि का समायोजन उसे संदेय उपदान की राशि से किया जाएगा।

स्पष्टीकरण— इस अध्याय में,—

(क) “गंभीर अपराध पद” के अन्तर्गत ऐसा अपराध आता है जिसमें शासकीय गुप्त बात अधिनियम, 1923 (1923 का 19) के अधीन कोई अपराध अन्तर्गत हो ;

(ख) “गंभीर अवचार” पद के अन्तर्गत कोई गुप्त शासकीय संकेत को या संकेत शब्द या किसी रेखाचित्र, रेखांक, प्रतिमान, चीज, टिप्पण, दस्तावेज या जानकारी को, जैसी कि शासकीय गुप्त बात अधिनियम, 1923 (1923 का 19) की धारा 5 में वर्णित है (जो कि निगम या किसी कंपनी के अधीन किसी पद को धारण करते समय प्राप्त हुई थी) संभूत या प्रकट करना आता है जिसमें कि जनसाधारण के हितों पर या राज्य की सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े।

46. विभागीय या न्यायिक कार्यवाहियों के दौरान पेंशन का संराणीकरण—कोई कर्मचारी जिसके विरुद्ध विभागीय 1551 GI/95=3

या न्यायिक कार्यवाहियां उसकी सेवानिवृत्ति के पूर्व संस्थित हो गई हों या कोई व्यक्ति जिसके विरुद्ध उसकी सेवानिवृत्ति के पश्चात् कार्यवाहियां संस्थित हों तो वह ऐसी कार्यवाहियों के विचाराधीन रहने के दौरान इस स्कीम के अधीन प्राधिकृत, यथारिधति, अपनी अन्तिम पेंशन के किसी भाग का संराणीकरण कराने का पात्र नहीं होगा।

47. निगम या किसी कंपनी को पहुंचाई गई धन संबंधी हानि की वसूली :—

(1) अपनी सेवा की अवधि के दौरान किसी विभागीय या न्यायिक कार्यवाहियों में गंभीर अवचार या लापरवाही या प्रमाद का दोषी पाए जाने वाले किसी पेंशनभोगी के कारण निगम या किसी कंपनी को हुई धन संबंधी हानि के लिये सक्षम प्राधिकारी स्थाई रूप में या किसी विनिर्दिष्ट अवधि के लिये उसकी पेंशन या उसके किसी भाग को रोक सकता है या प्रत्याहृत कर सकता है और पूरी रकम या उसके किसी भाग को पेंशन से वसूल करने के आदेश दे सकता है :

परन्तु यह कि किसी अंतिम आदेश को पारित करने से पूर्व निगम या किसी कंपनी के बोर्ड से परामर्श किया जायेगा :

परन्तु यह और कि विभागीय कार्यवाहियां यदि कर्मचारी के सेवाकाल के दौरान से ही संस्थित है और कर्मचारी इस दौरान, सेवानिवृत्त हो जाता है, तो वे इस पैरा के अधीन इसे कार्यवाही समझी जायेगी और इन कार्यवाहियों को शुरू करने वाले प्राधिकारी द्वारा उन्हें ऐसे जारी रखा जायेगा और पूरा किया जायेगा मानो कर्मचारी सेवा में बना हुआ है :

परन्तु यह और भी कि विभागीय या न्यायिक कार्यवाही यदि कर्मचारी के सेवाकाल में प्रारंभ नहीं की गई है तो ऐसी कार्यवाही संस्थित होने में चार वर्ष से अधिक से पहले के किसी वाद हेतुक की बाबत में या इस अवधि में हुई किसी घटना की बाबत, कोई विभागीय या न्यायिक कार्यवाही संस्थित नहीं की जायेगी।

(2) जहां सक्षम प्राधिकारी धन संबंधी हानि की वसूली पेंशन में करने का आदेश दे वहां वह ऐसी वसूली सामान्यतः सेवानिवृत्ति की तारीख को अनुज्ञेय पेंशन के एक तिहाई भाग से अधिक दर पर नहीं की जायेगी ;

परन्तु यह कि जहां पेंशन का कोई भाग रोक लिया जाता है या प्रत्याहृत किया जाता है वहां पेंशनभोगी की पेंशन राशि इस स्कीम के अधीन संदेय न्यूनतम पेंशन राशि से कम नहीं होगी।

48. निगम या किसी कम्पनी को देय (बकायों) की बसूली.—निगम या कोई कंपनी पेंशन के संरक्षण मूल्य या पेंशन या कुटुंब पेंशन में आवास शुल्क, अग्रिम, अनुग्रहित शुल्क, अन्य बसूलियां निगम या किसी कंपनी को देय (बकाया) और कर्मचारी को अपरेंटिव क्रेडिट सोसायटी को देय (बकायों) की बसूली करने की हकदार होगी।

49. सेवानिवृत्ति के पश्चात् वाणिज्यिक नियोजन :

(1) यदि कोई पेंशनभोगी, जो अपनी सेवानिवृत्ति में ठीक पहले उप प्रबन्धक या उससे उच्च काष्ठ का अधिकारी था और अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख में दो वर्ष की समाप्ति से पूर्व कोई वाणिज्यिक नियोजन स्वीकार करना चाहता है, तो यह ऐसी स्वीकृति के लिये, यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी की पूर्व मंजूरी प्राप्त करेगा :

परन्तु यह कि ऐसे कर्मचारी को जिसे उसकी सेवानिवृत्ति पूर्व छुट्टी के दौरान या अस्वीकृत छुट्टी के दौरान किसी विशेष प्रकार का वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करने के लिये, यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी, द्वारा अनुज्ञान किया गया था, सेवानिवृत्ति के पश्चात् ऐसे नियोजन में बने रहने के लिए, यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी से बाद में अनुज्ञा प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होगी।

(2) पैरा (3) के उपबन्धों के अधीन रहते हुए, यथास्थिति, निगम या कंपनी लिखित आदेश द्वारा पेंशनभोगी द्वारा किये गये आवेदन पर ऐसे पेंशनभोगी को आवेदन में विनिर्दिष्ट वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करने के लिये ऐसी शर्तों के, यदि कोई हो, जिन्हें वह आवश्यक समझे, अधीन रहते हुए आदेश में लेखबद्ध किये जाने वाले कारणों से अनुज्ञा दे सकेगा या अनुज्ञा देने से इंकार कर सकेगा।

(3) किसी पेंशनभोगी को कोई वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करने के लिये पैरा (2) के अधीन अनुज्ञा देने या देने से इंकार करने में, यथास्थिति, निगम या कंपनी निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखेगी, अर्थात्:—

(क) ग्रहण किये जाने के लिये प्रस्तावित नियोजन की प्रकृति और नियोजन के पूर्ववृत्त :

(ख) क्या उस नियोजन में जो वह ग्रहण करने का प्रस्ताव करता है, उसके कर्तव्य ऐसे हो सकते हैं जिनसे उसका, यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी के साथ विरोध हो,

(ग) क्या पेंशनभोगी की उसकी सेवा के दौरान नियोजन के साथ, जिसके अधीन वह नियोजन चाहता है, ऐसा व्यवहार था कि जिससे वह निलम्बन के लिये यह युक्तियुक्त आधार बने

कि ऐसे पेंशनभोगी गये ऐसे नियोजन के प्रति अनुग्रह वर्णित किया था ;

(घ) क्या प्रस्तावित वाणिज्यिक नियोजन के कर्तव्यों में, यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी के साथ सम्पर्क या संबंध अंतर्वर्तित है :

(ङ) क्या उसके वाणिज्यिक कर्तव्य ऐसे होंगे कि, यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी के अधीन उसकी पूर्व पदीय स्थिति या ज्ञान या अनुभव का प्रस्तावित नियोजन को फायदा देने के लिये उपयोग किया जा सकता है :

(च) प्रस्तावित नियोजक द्वारा प्रस्थापित परिलक्षित्य और

(छ) कोई अन्य सुसंगत तथ्य।

(4) जहां पैरा (3) के अधीन किसी आवेदन की प्राप्ति की तारीख से साठ दिन की कालावधि के भीतर, यथास्थिति, निगम या कोई कंपनी आवेदित अनुज्ञा देने से इंकार नहीं करती है या आवेदन को इंकार किये जाने की संसूचना नहीं देती है वहां यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी के बारे में यह समझा जायेगा कि उसने आवेदित अनुज्ञा दे दी है :

परन्तु किसी ऐसी दशा में जहां आवेदक द्वारा तृटिपूर्ण या अपर्याप्त सूचना दी जाती है और यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी के लिये उससे और स्पष्टीकरण या जानकारी मांगना आवश्यक हो जाता है वहां साठ दिन की अवधि की गणना उस तारीख से की जायेगी जिसको आवेदक द्वारा तृटियां दूर की गई हैं या पूर्ण जानकारी दी गई हैं।

(5) जहां यथास्थिति, निगम या कोई कंपनी आवेदित अनुज्ञा किन्हीं शर्तों के अधीन रहते हुए देती है या ऐसी अनुज्ञा देने से इंकार करती है वहां आवेदक उम आशय के, यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी के आदेश की प्राप्ति के तीस दिन के भीतर किसी ऐसी शर्त या इंकार किए जाने के विरुद्ध अप्पावेदन कर सकेगा और, यथास्थिति, निगम या कोई कंपनी उम पर ऐसे आदेश कर सकेगा जो वह ठीक समझे :

परन्तु ऐसी शर्त को रद्द करने वाले या बिना किसी शर्त के ऐसी अनुज्ञा देने वाले किसी आदेश से भिन्न कोई आदेश, अप्पावेदन करने वाले पेंशनभोगी को किए जाने के लिए प्रस्तावित आदेश के विरुद्ध कारण दर्शाते करने का अवसर दिए बिना उम उपपरा के अधीन नहीं किया जाएगा।

(6) यदि कोई पेंशनभोगी, यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी की पूर्व अनुज्ञा के बिना अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख से दो वर्ष की समाप्ति के पूर्व किसी समय कोई वाणिज्यिक नियोजन ग्रहण करता है या किसी ऐसी शर्त को भंग करता है जिसके अधीन कोई वाणिज्यिक नियोज-

जन्म, ग्रहण करने की ऐसी अनुज्ञा उसे इस पैरा के अधीन दी गई है तो यथास्थिति, निगम या कोई कंपनी लिखित आदेश द्वारा और उसमें लेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से यह घोषणा करने के लिए सक्षम होगा कि वह सम्पूर्ण पेंशन या उसके ऐसे भाग का और ऐसी कालावधियों के लिए जो आदेश में विनिर्दिष्ट की जाएं हकदार नहीं होगा:

परन्तु ऐसा कोई आदेश संबंधित पेंशनभोगी की ऐसी घोषणा के विरुद्ध कारण दर्शित करने का अवसर दिए बिना नहीं किया जाएगा :

परन्तु यह और कि इस उप-पैरा के अधीन कोई आदेश, करने में, यथास्थिति, निगम या कोई कंपनी निम्नलिखित बातों का ध्यान रखेगी, अर्थात्:—

- (i) संबंधित पेंशनभोगी की वित्तीय परिस्थितियां;
- (ii) संबंधित पेंशनभोगी द्वारा ग्रहण किए वाणिज्यिक नियोजन की प्रकृति और उससे प्राप्त होने वाली परिलब्धियां; और

(iii) कोई अन्य संगत तथ्य।

(7) इस नियम के अधीन यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी द्वारा पारित किया गया कोई आदेश संबंधित पेंशनभोगी को संसूचित किया जाएगा।

(8) इस नियम में,—

(क) “वाणिज्यिक नियोजन” पद से,—

(i) व्यापारिक, वाणिज्यिक, औद्योगिक, वित्तीय या वृत्तिक कारबार में लगी हुई किसी कंपनी, सहकारी सोसाइटी, फर्म या व्यक्ति के अधीन किसी भी हैसियत में कोई नियोजन अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत ऐसी कंपनी का निदेशकत्व और ऐसी फर्म की भागीदारी भी सम्मिलित है, किन्तु ऐसे निगमित निकाय के अधीन, जिस पर केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार का पूर्णतः या सारतः स्वामित्व या नियंत्रण हो, नियोजन इसके अन्तर्गत नहीं आता है;

(ii) स्वतंत्र रूप से या किसी फर्म के भागीदार के रूप में, ऐसे मामलों में सलाहकार या परामर्शदाता के रूप में प्रैक्टिस स्थापित करना अभिप्रेत है जिनकी बाबत पेंशनभोगी—

(क) के पास कोई वृत्तिक अर्हताएं न हों और जिन मामलों की बाबत प्रैक्टिस की स्थापना करनी है, या उसे संचालित करना है उनका संबंध उसके पदीय ज्ञान या अनुभव से हो, या

(ख) के पास वृत्तिक अर्हताएं हों किन्तु जिन मामलों की बाबत ऐसी प्रैक्टिस स्थापित करना है वे ऐसे हों कि उनकी पूर्ण पदीय स्थिति के कारण उसके ग्राहकों को अशुभ फायदा होना संभाव्य हो, अथवा

(ग) को ऐसा काम लेना पड़े जिसमें यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी के कार्यालयों या अति-कारियों के साथ संपर्क या संबंध स्थापित करना पड़ सकता हो;

स्पष्टीकरण :—(क) इस खंड के प्रयोजन के लिए “सहकारी सोसाइटी के अधीन नियोजन” पद के अन्तर्गत किसी पद का, चाहे वह निर्वाचन कराके मिलता हो या अन्यथा धारण करना आता है, भले ही उस सोसाइटी में वह किसी भी नाम से जाना जाता हो, जैसे अध्यक्ष, सभापति, प्रबन्धक, सचिव, कोषपाल, इत्यादि;

50. नामनिर्देशन :—(1) न्यास इन नियमों द्वारा शासित प्रत्येक कर्मचारी को ऐसा नामनिर्देशन करने के लिए अनुज्ञात करेगा जिसमें पेंशन संबंधी फायदों की रकम संदेय लेने या, संदेय न जाने के पश्चात् संदेय न किए जाने के पूर्व उसकी मृत्यु हो जाने की दशा में इस स्कीम के अधीन पेंशन संबंधी फायदों की रकम प्राप्त करने का अधिकार एक या एक से अधिक व्यक्तियों को प्रदान किया गया हो। ऐसे नामनिर्देशन के ऐसे प्रारूप में समय समय पर, यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी द्वारा विनिर्दिष्ट किया जा सकेगा।

(2) यदि कोई कर्मचारी पैरा (1) के अधीन एक से अधिक व्यक्तियों का नाम निर्देशन करता है, तो वह नामनिर्देशन में नामनिर्देशनियों में से प्रत्येक को संदेय भाग की रकम इस रीति से करेगा कि उसके अन्तर्गत उसकी मृत्यु के पश्चात् सम्पूर्ण पेंशन फायदे की रकम आ जाए।

(3) किसी कर्मचारी द्वारा किसी समय पर किए गए नामनिर्देशन को यथास्थिति, निगम या किसी कंपनी द्वारा समय समय पर विनिर्दिष्ट ऐसे प्रारूप में न्यास को लिखित सूचना देकर उसका उपान्तरण किया जा सकता है या उसका प्रतिसंदर्भण किया जा सकता है।

(4) कोई नामनिर्देशन या इसका प्रतिसंदर्भण या इसका उपान्तरण न्यास को प्राप्त होने की तारीख से उस सीमा तक जिस तक वह विधिमान्य है, प्रभावी होगा।

51. पेंशन संदेय होने की तारीख :—(1) ऐसे कर्मचारी के सिवाय जिसको पैरा 42 और पैरा 45 के उपबंध लागू होते हैं, कुटुम्ब पेंशन से भिन्न पेंशन उस तारीख से जिसको कर्मचारी सेवानिवृत्त होता है, अगली तारीख से संदेय हो जाएगी।

(2) कुटुम्ब पेंशन कर्मचारी या पेंशनभोगी की मृत्यु की तारीख अगली तारीख के पश्चात् की तारीख से संदेय होगी।

(3) पेंशन जिसके अन्तर्गत कुटुम्ब पेंशन भी है उस दिन के लिए संदेय होगी, जिस दिन उसके प्राप्तकर्ता की मृत्यु हो जाती है।

52. मुद्रा जिसमें पेंशन संदेय होगी :—इस स्कीम के अधीन अनुज्ञेय सभी पेंशन केवल भारत में रुपए में संदेय होगी।

53. पेंशन संदाय की रीति :—मासिक दर में नियत की गई पेंशन अगले मास के पूर्व दिन को या उसके पश्चात् मासिक रूप से संदेय होगी।

54. अनुदेश जारी करने की शक्ति :—निगम का अध्यक्ष और संबद्ध, कंपनी का अध्यक्ष सह-प्रबंध निदेशक निगम के अध्यक्ष से परामर्श करके समय-समय पर इन नियमों को कार्यान्वयन के लिए जो वह आवश्यक या समीचीन समझे, अनुदेश जारी कर सकेगा।

55. अवशिष्ट उपबंध :—पेंशन या अन्य फायदों को, जिनके संबंध में इस स्कीम में कोई अधिव्यक्त उपबंध नहीं किया गया है, केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को लागू केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंशन) नियम, 1972 या केन्द्रीय सिविल सेवा, (पेंशन संराशिकरण) नियम, 1981 में अन्तर्विष्ट तत्संबंधी उपबंधों द्वारा शासित होंगे।

परिशिष्ट-1

(पैरा 30 में स्पष्टीकरण देखिए)

कर्मचारियों के प्रवर्ग	नियोक्ता प्राधिकारी
(i) महाप्रबन्धक, सहायक महाप्रबन्धक और उसके समतुल्य संवर्ग	निगम का अध्यक्ष
(ii) प्रबन्धक, उप प्रबन्धक और उसके समतुल्य संवर्ग	महाप्रबन्धक
(iii) सहायक प्रबन्धक, प्रशासनिक अधिकारी, सहायक प्रशासनिक अधिकारी और उसके समतुल्य संवर्ग।	सहायक महाप्रबन्धक
(iv) विकास अधिकारी	प्रबन्धक
(v) वरिष्ठ सहायक/आशुलिपिक और उसके समतुल्य संवर्ग	प्रबन्धक
(vi) सहायक और उसके समतुल्य संवर्ग	उप प्रबन्धक
(vii) अधीनस्थ कर्मचारिवृन्द और उसके समतुल्य संवर्ग	सहायक प्रबन्धक

परिशिष्ट-2

(पैरा 28 देखिए)

स्थायी अंशकालिक आधार पर की गई वास्तविक सेवा	पेंशन की राशि के परिकलन के लिए स्थायी अंशकालिक आधार पर की गई प्रत्येक वर्ष की सेवा के लिए तत्स्थानी अर्हक सेवा की अवधि
---	--

(1)

(2)

3 घंटे से कम
3 घंटे या उससे अधिक किन्तु 4 घंटे से कम
4 घंटे या अधिक किन्तु 5 घंटे से कम
5 घंटे या अधिक किन्तु 6 घंटे से कम
6 घंटे या अधिक किन्तु 7 घंटे से कम
7 घंटे से अधिक किन्तु 8 घंटे से कम

वर्ष का 1/4
वर्ष का 3/8
वर्ष का 1/2
वर्ष का 5/8
वर्ष का 3/4
वर्ष का 7/8

परिशिष्ट-3

(पैरा 34 देखिए)

1 जनवरी, 1986 और 31 जुलाई, 1987 के बीच सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों के सम्बन्ध में मूल पेंशन और अतिरिक्त पेंशन को अद्यतन करने का सूत्र निम्नलिखित रूप में होगा :—

अ (1) मूल पेंशन निम्नलिखित राशि तक बढ़ायी जाएगी,—

(क) पेंशन के लिए गणना किए जाने योग्य औसत उपलब्धियों के प्रथम 1000 रुपये का रु.
50 प्रतिशत

(ख) अगले 500 रु. का 45 प्रतिशत रु.

(ग) पेंशन के लिए गणना किए जाने योग्य 1500 रुपये से अधिक औसत उपलब्धियों का रु.
40 प्रतिशत रु.

कुल (क + ख + ग) रु. (अ)

आ. सेवा निवृत्ति के पहले सेवा के अंतिम 10 मासों की औसत मासिक उपलब्धियों का 50 प्रतिशत रु. (आ)

इ. उपर्युक्त (1) पर संगणित मूल पेंशन पर नीचे दी गई सारणी के अनुसार $1960 = 100$ शृंखला में औद्योगिक कर्मचारों के लिए अखिल भारतीय औसत उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में 600 सूचकांक पर मंहगाई राहत

ई. कुल बची हुई मूल पेंशन रु. (ई)

$= (आ) + (ई) \times$

अर्हक सेवा के वर्षों की संख्या (अधिकतम 33 वर्ष)

33

उ. तारीख 1-1-1993 की मूल पेंशन रु. (उ)

(अगले उच्चतर रुपये से तक पूर्णांकित)

(2) अतिरिक्त पेंशन में वृद्धि के लिए भविष्य निधि में अभिदान करने के लिए गणना में लिए जाने वाले विशेष भत्तों की रकम सुसंगत सुव्यवस्थीकरण स्कीम के अनुसार भविष्य निधि की श्रेणी में आने वाले विशेष भत्तों की मात्रा के प्रति निर्देश में बढ़ाई जाएगी।

सारणी

1-1-1986 से 31-7-1987 की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त हुए सभी वर्गों के कर्मचारियों के लिए $1960 = 100$ शृंखला में औद्योगिक कर्मचारों के लिए अखिल भारतीय औसत उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में सूचकांक सं. 600 पर निकाली गई मंहगाई राहत की दरें

(क) अधीनस्थ कर्मचारिवृत्त उपर्युक्त (1) पर संगणित पेंशन का 80.40 प्रतिशत

(ख) 757 रु. प्रतिमास तक पेंशन पाने वाले पर्यवेक्षीय और लिपिकीय उपर्युक्त (1) पर संगणित पेंशन का 67 प्रतिशत
कर्मचारिवृत्त

(ग) 757 रु. प्रतिमास और उससे अधिक पेंशन पाने वाले पर्यवेक्षीय और लिपिकीय कर्मचारियों के निम्नलिखित मंहगाई राहत के लिए पात्र होंगे :—

प्रतिमास की जाने वाली मूल पेंशन की रकम रु.	अनुश्रेय मंहगाई राहत की रकम रु.
(1)	(2)
757 से 796	508.00
797 से 804	534.00
805 से 824	540.00
825 से 844	553.00
845 से 864	567.00
865 से 884	580.00
885 से 904	593.00
905 से 924	607.00
925 से 944	620.00
945 से 964	634.00
965 से 984	647.00
985 से 1004	660.00
1025 से 1044	687.00
1045 से 1064	701.00
1065 से 1084	714.00
1085 और उससे ऊपर	727.00

(घ) अधिकारी और विकास कर्मचारियों के निम्नलिखित रूप में मंहगाई राहत के पात्र होंगे :

(क) प्रतिमास 765 रु. तक मूल पेंशन पाने वालों के लिए; अधिकतम 500 रु. के अधीन रहते हुए उपर्युक्त (1) के अनुसार संगणित पेंशन की रकम का 66 प्रतिशत।

(ख) प्रतिमास 766 रु. से 1165 रु. तक पेंशन पाने वालों के लिए; 500 रु.

(ग) प्रतिमास 1166 रु. या उससे अधिक पेंशन पाने वालों के लिए; अधिकतम 715 रु. के अधीन रहते हुए उपर्युक्त (1) के अनुसार संगणित पेंशन की रकम का 42.90 प्रतिशत।

परिशिष्ट-4

(नियम 36 देखिए)

मूल पेंशन पर मंहगाई राहत निम्नलिखित रूप में होगी :—

ऐसे कर्मचारियों की दशा में, जो 1 जनवरी, 1986 को या उसके पश्चात् किन्तु 1 नवंबर, 1993 से पहले सेवानिवृत्त हो चुके हैं 1960-100 श्रृंखला में औद्योगिक कर्मचारों के लिए अखिल भारतीय औद्योगिक उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की तिमाही

श्रीसत में 600 प्वाइंट से ऊपर प्रत्येक 4 प्वाइंट के लिए मंहगाई राहत, यथास्थिति, प्रत्येक बढ़ोत्तरी के लिए संदेय या प्रत्येक गिरावट के लिए बसूलनीय होगी। ऐसे प्रत्येक उक्त 4 प्वाइंट के लिए मंहगाई राहत में ऐसी वृद्धि या कमी की संगणना नीचे दी गई रीति से की जाएगी।

प्रतिमास मूल पेंशन का मान	मूल पेंशन के प्रतिशत के रूप में मंहगाई राहत दर
(1)	(2)
(i) 1250 रु. तक	0.67 प्रतिशत
(ii) 1251 रु. से 2000 रु. तक	1250 रु. का 0.67 प्रतिशत जमा (+) 1250 रु. से अधिक मूल पेंशन का 0.55 प्रतिशत।
(iii) 2001 रु. से 2130 रु. तक	1250 रु. का 0.67 प्रतिशत जमा (+) 2000 रु. और 1250 रु. के बीच के अन्तर का 0.55 प्रतिशत जमा 2000 रु. से अधिक मूल पेंशन का 0.33 प्रतिशत।
(iv) 2130 रु. से ऊपर	1250 रु. का 0.67 प्रतिशत जमा (+) 2000 रु. और 1250 रु. के बीच के अन्तर का 0.55 प्रतिशत जमा (+) 2130 रु. और 2000 रु. के बीच के अन्तर का 0.33 प्रतिशत जमा (+) 2130 रु. से अधिक मूल पेंशन का 0.17 प्रतिशत

(2) ऐसे कर्मचारियों की दशा में, जो 1 नवम्बर, 1993 को या उसके पश्चात् सेवानिवृत्त हो चुके हैं, 1960=100 श्रृंखला में औद्योगिक कर्मचारियों के लिए अखिल भारतीय औसत उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की तिमाही औसत में 1148 प्वाइंट से ऊपर प्रत्येक 4 प्वाइंट के लिए मंहगाई राहत, यथास्थिति प्रत्येक बढ़ोत्तरी के लिए संदेय या प्रत्येक गिरावट के लिए बसूलनीय होगी। ऐसे प्रत्येक उक्त 4 प्वाइंट के लिए मंहगाई राहत में ऐसी वृद्धि या कमी की संगणना नीचे दी गई रीति से की जाएगी।

प्रतिमास मूल पेंशन का मान	मूल पेंशन के प्रतिशत के रूप में मंहगाई राहत की दर
(1)	(2)
(i) 2400 रु. तक	0.35 प्रतिशत।
(ii) 2401 से 3850 रु. तक	2400 रु. का 0.35 प्रतिशत जमा (+) 2400 रु. से अधिक पेंशन का 0.29 प्रतिशत।
(iii) 3851 रु. से 4100 रु. तक	2400 रु. का 0.35 प्रतिशत जमा (+) 3850 रु. और 2400 रु. के बीच के अन्तर का 0.29 प्रतिशत जमा (+) 3850 रु. से अधिक मूल पेंशन का 0.17 प्रतिशत
(iv) 4100 रु. से ऊपर	2400 रु. का 0.35 प्रतिशत जमा (+) 3850 रु. और 2400 रु. के बीच के अन्तर का 0.29 प्रतिशत जमा (+) 4100 रु. और 3850 रु. के बीच के अन्तर का 0.17 प्रतिशत जमा (+) 4100 रु. से अधिक मूल पेंशन का 0.09 प्रतिशत।

(3) मंहगाई राहत 1 फरवरी से प्रारंभ होने वाली और 31 जुलाई को समाप्त होने वाली छमाही के लिए पूर्व वर्ष के अक्तूबर, नवम्बर और दिसम्बर मास के लिए प्रकाशित सूचकांक की तिमाही औसत के आधार पर तथा 1 अगस्त से प्रारंभ होने वाली और 31 जनवरी को समाप्त होने वाली छमाही के लिए उसी वर्ष के अप्रैल, मई और जून मास के लिए प्रकाशित सूचकांक की तिमाही औसत के आधार पर संदेय होगी।

(4) कुटुम्ब पेंशन, अणक पेंशन और अनुकंपा भत्ते के मामले में मंहगाई राहत ऊपर उल्लिखित दरों के अनुसार संदेय होगी।

(5) मंहगाई राहत संराशीकरण के पश्चात् भी पूर्ण मूल पेंशन पर अनुज्ञात होगी।

(6) असिद्धित पेंशन पर मंहगाई राहत संदेय नहीं है।

परिशिष्ट-5

(पैरा 38 देखिए)

कुटुम्ब पेंशन की सामान्य दरें निम्नलिखित होंगी—

(क) 1-11-1993 में पूर्व सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों की बाबत

प्रतिमास वेतनमान (1)	मासिक कुटुम्ब पेंशन की रकम (2)
1500 रु. तक	वेतन का 30 प्रतिशत मूल कुटुम्ब पेंशन होगी जमा ऐसे भत्तों, जिनकी भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए किन्तु महंगाई भत्ते के लिए नहीं गणना की जाती है, का 30 प्रतिशत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन होगी। मूल और अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन का योग 375 रु. प्रतिमास से कम नहीं होगा।
1501 से 3000 रु.	वेतन का 20 प्रतिशत मूल कुटुम्ब पेंशन होगी जमा ऐसे भत्तों, जिनकी भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए किन्तु महंगाई भत्ते के लिए नहीं, गणना की जाती है, का 20 प्रतिशत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन होगी। मूल और अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन का योग 450 रु. प्रतिमास से कम नहीं होगा।
3000 रु. से ऊपर	वेतन का 15 प्रतिशत मूल कुटुम्ब पेंशन होगी जमा ऐसे भत्तों, जिनकी भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए किन्तु महंगाई भत्ते के लिए नहीं, गणना की जाती है, का 15 प्रतिशत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन होगी। मूल और अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन का योग 600 रु. प्रतिमास से कम और 1250 रु. प्रतिमास से अधिक नहीं होगा।

(ख) 1-11-1993 को या उसके पश्चात सेवानिवृत्त हुए या सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों की बाबत

वेतनमान (1)	मासिक कुटुम्ब पेंशन की रकम (2)
2870 रु. तक	वेतन का 30 प्रतिशत मूल कुटुम्ब पेंशन होगी जमा ऐसे भत्तों, जिनकी भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए किन्तु महंगाई भत्ते के लिए नहीं, गणना की जाती है, का 30 प्रतिशत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन होगी। मूल और अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन का योग न्यूनतम 720 रु. प्रतिमास होगा।
2871 रु. से 5740 रु.	“वेतन” का 20 प्रतिशत मूल कुटुम्ब पेंशन होगी जमा ऐसे भत्तों, जिनकी भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए किन्तु महंगाई भत्ते के लिए नहीं, गणना की जाती है, का 20 प्रतिशत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन होगी। मूल और अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन का योग न्यूनतम 860 रु. प्रतिमास होगा।
5740 रु. से ऊपर	वेतन का 15 प्रतिशत मूल कुटुम्ब पेंशन होगी जमा ऐसे भत्तों, जिनकी भविष्य निधि में अंशदान करने के लिए किन्तु महंगाई भत्ते के लिए नहीं, गणना की जाती है, का 15 प्रतिशत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन होगी। मूल और अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन का योग न्यूनतम 1150 रु. प्रतिमास और अधिकतम 2400 रु. प्रतिमास होगा।

टिप्पण :— (1) महंगाई राहत अतिरिक्त कुटुम्ब पेंशन पर संदेय नहीं है।

(2) उपरोक्तानुसार कुटुम्ब पेंशन की गणना के प्रयोजन के लिए “वेतनमान” 2 के खण्ड (त) में यथापरिभाषित “वेतन” और नियम 34 के उपपैरा (3) के स्पष्टीकरण में यथापरिभाषित “भत्तों” का योग होगा।

[फा. सं. 2(4) बीमा-III/94 (ii)]

सी. एस. राव, संयुक्त सचिव (बीमा)

स्पष्टीकारक ज्ञापन

भारतीय माध्याम बीमा निगम की स्थापना माध्याम बीमा कारबार राष्ट्रीयकरण अधिनियम, 1972 के अधीन की गई थी। निगम और उसकी सहायक कंपनियों के कर्मचारियों की सेवा के निबंधन और गत उक्त अधिनियम की धारा 16 और धारा 17 के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा बनाई गई मुख्यवस्थीकरण स्कीमों द्वारा शासित होते हैं।

अधिनियम की धारा 16 और धारा 17 के अधीन मुख्यवस्थीकरण स्कीमों में स्थानांतरित कर्मचारियों को छोड़कर किसी के निरपेक्ष के संदाय का उपबंध नहीं है।

निगम और कंपनी के कर्मचारियों की ओर से निगम और कंपनियों में पेंशन स्कीम शुरू करने के लिए निरंतर मांग की जाती रही है। निगम ने कर्मचारियों की युनियनों के साथ परामर्श करके भविष्य निधि में किए जाने वाले निगम या कंपनी के अंशदान के बदले 1 नवम्बर, 1993 से सुवर्कोक पर आधारीत पेंशन स्कीम लागू करने की सिफारिश की है।

प्रस्तावित पेंशन स्कीम उन्हें लागू होंगी जिन्होंने निगम या सहायक कंपनियों की सेवा में 1-11-1993 को या उसके पश्चात प्रवेश किया। तथापि, पेंशन स्कीम का फायदा ऐसे कर्मचारियों को भी दिए जाने का प्रस्ताव है जो 1-11-1986 को या उसके पश्चात सेवानिवृत्त हो गए हैं या जिनकी मृत्यु हो गई है। उन कर्मचारियों के संबंध में भी, जिनकी मृत्यु हो चुकी है, कनिष्ठ शर्तों को पूरा करने के अधीन रहते हुए, कुटुम्ब पेंशन का फायदा दिए जाने का भी प्रस्ताव है।

प्रमाणित किया जाता है कि इस पेंशन स्कीम को भूतलक्षी प्रभाव से लागू करने में निगम या संबंधित कंपनी के किसी भी कर्मचारी पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है।

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Economic Affairs)
(Insurance Division)

NOTIFICATION

New Delhi, the 28th June, 1995.

S.O. 585(E) :—In exercise of the powers conferred by section 17 A of the General Insurance Business (Nationalisation) Act, 1972 (57 of 1972), the Central Government hereby makes the following scheme, namely:—

CHAPTER-I

PRELIMINARY

1. Short title and commencement :—(1) This Scheme may be called the General Insurance (Employees') Pension Scheme, 1995

(2) Save as otherwise expressly provided in this scheme, this scheme shall be deemed to have come into force on the 1st day of November, 1993.

2. Definitions.—In this scheme, unless the context otherwise requires :—

- (a) "Act" means the General Insurance Business (Nationalisation) Act, 1972 (57 of 1972);
- (b) "actuary" shall have the meaning assigned to it in clause (1) of section (2) of the Insurance Act, 1938 (4 of 1938);
- (c) "Appendix" means an appendix annexed to his scheme;
- (d) "average emoluments" means the average of pay drawn by an employee during the last ten months of his service;

(e) "Child" means a child of the employee, who, if a son, is under twenty five years of age and if a daughter, is unmarried and is under twenty-five years of age and the expression "children" shall be construed accordingly;

(f) "Company" means National Insurance Company Limited, The New India Assurance Company Limited, The Oriental Insurance Company Limited, and United India Insurance Company Limited;

(g) "competent authority" means—

(i) in the case of posts above the General Manager in the Corporation, the Corporation, and in the case of posts above the General Manager in the Company, the Company;

(ii) in the case of officers belonging to the cadre of General Manager or Assistant General Manager in the Corporation, the Chairman of the Corporation, and in the case of officers belonging to the cadre of General Manager or Assistant Manager in the Company, the Chairman cum-Managing Director of the Company;

(iii) in the case of officers belonging to the cadre of Manager or Deputy Manager in the Corporation, the Managing Director of the Corporation, and in the case of officers belonging to the cadre of Manager or Deputy Manager in the Company, the Chairman-cum-Managing Director of the Company;

- (iv) in the case of officers belonging to other cadres in the Corporation, the General Manager in-charge of Personnel of the Corporation, and in the case of officers, belonging to other cadres in the Company, the General Manager in-charge of Personnel of the Company;
- (v) in any other case in the Corporation, the Manager in-charge of Personnel of the Corporation and in any other case in the Company, the Manager in-charge of Personnel of the Company.
- (h) "contribution" means any sum credited by the Corporation or a Company, as the case may be, on behalf of an employee to the Fund, but shall not include any sum credited as interest;
- (i) "Corporation" means the General Insurance Corporation of India formed under Section 9 of the Act;
- (j) "date of retirement" means the last day of the month in which an employee attains the age of superannuation or the date on which he is retired by the Corporation or a Company or the date on which the employee voluntarily retires;
- (k) "employee" means any person employed in the service of the Corporation or a Company on full time work on permanent basis and who opts and is governed by this scheme;
- (l) "family" in relation to an employee means—
- (i) wife in the case of a male employee or husband in the case of a female employee;
 - (ii) a judicially separated wife or husband, such separation not being granted on the ground of adultery and the person surviving was not held guilty of committing adultery;
 - (iii) son who has not attained the age of twenty-five years and unmarried daughter who has not attained the age of twenty five years including such son or daughter adopted legally before retirement;
- (m) "financial year" means a year commencing on the first day of April;
- (n) "Fund" means a fund constituted under paragraph 5 of this scheme;
- (o) "notified date" means the date on which this scheme is published in the Official Gazette;
- (p) "Pay" includes.—
- (a) in relation to an employee who has retired or died on or after the 1st day of January, 1986 but before the 1st day of November, 1993—
 - (i) the basic pay including the stagnation increments, if any; and
 - (ii) all allowances counted for the purposes of making contribution to the Provident Fund and for the payment of dearness allowance;
 - (b) in relation to an employee who retires or dies while in service on or after the 1st day of November, 1993—
 - (i) the basic pay including the stagnation increments, if any; and
 - (ii) all allowances counted for the purposes of making contribution to the Provident Fund and for the payment of dearness allowance;
 - (iii) fixed personal allowance not exceeding the last increment in the scale of pay; and
 - (iv) dearness allowance calculated upto Index number 1148 in the All India Average Consumer Price Index for Industrial Workers, in the series 1960 = 100;
 - (q) "pension" includes the basic pension and the additional pension referred to in Chapter-VI of this scheme;
 - (r) "pensioner" means an employee eligible for pension under this scheme;
 - (s) "qualifying service" means the service rendered while on duty or otherwise which shall be taken into account for the purpose of pension under this scheme;
 - (t) "retirement" means—
 - (i) the retirement in accordance with the provisions contained in paragraph 12 of General Insurance (Rationalisation and Revision of Pay Scales and Other Conditions of Service of Supervisory, Clerical and Subordinate Staff) Scheme, 1974 notified under the notification of Government of India, in the Ministry of Finance (Department of Revenue and Insurance) number S.O. 326(E) dated 27th May, 1997;

(ii) the retirement in accordance with the provisions contained in paragraph 4 of the General Insurance (Termination, Superannuation and Retirement of Officers and Development Staff) Scheme, 1976 notified under notification of Government of India, in the Ministry of Finance (Department of Economic Affairs) number S.O. 627 dated 21st September, 1976;

(iii) voluntary retirement in accordance with the provisions contained in paragraph 30 of this scheme;

(u) "Rationalisation Scheme" means,

(i) the General Insurance (Rationalisation and Revision of pay Scales and Other Conditions of Service of Supervisory, Clerical and Subordinate Staff) Scheme, 1974, notified under the notification of Government of India, in the Ministry of Finance (Department of Revenue and Insurance) number S. O. 326 (E) dated the 27th May, 1974;

(ii) the General Insurance (Rationalisation of pay Scales and Other Conditions of Service of Officers) Scheme, 1975 notified under the notification of Government of India, in the Ministry of Finance (Department of Revenue and Insurance) number S.O 521 (E) dated the 17th September, 1975;

(iii) the General Insurance (Rationalisation of pay Scales and Other Conditions of Service of Development Staff) Scheme, 1976, notified under the notification of Government of India, in the Ministry of Finance (Department of Economic Affairs) number S. O. 327 (E) dated 29th April, 1976;

(iv) the General Insurance (Termination, superannuation and Retirement of Officers and Development Staff) Scheme, 1976, notified under the notification of Government of India, in the Ministry of Finance (Department of Economic Affairs) number S. O. 627 (E) dated the 21st September, 1976;

(v) "trust" means the trust of the Corporation or a Company constituted under sub-paragraph (1) of paragraph 5;

(w) "trustee" means the trustee of a Fund constituted under paragraph 5;

(x) "trustee of the provident Fund" means the trustee of the provident Fund relating to the employ-

ees of the Corporation or a Company, as the case may be;

(y) all other words and expressions used in this scheme and not defined, but defined in the Act, or the Rationalisation Schemes shall have the same meanings respectively assigned to them in that Act or the respective Rationalisation Schemes.

CHAPTER- II

APPLICATION AND ELIGIBILITY

3. Application—This scheme shall apply to employees who,—

(1) (a) were in the service of the Corporation or a Company, as the case may be, on or after the first day of January, 1986 but had retired before the first day of November, 1993; and

(b) exercise an option in writing within one hundred and twenty days from the notified date to become member of the Fund; and

(c) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (b) the entire amount of the Corporation's contribution or the Company's contribution to Provident Fund including interest accrued thereon together with a further simple interest at the rate of six per cent per annum on the said amount from the date of settlement of the provident Fund account till the date of refund of the aforesaid amount to the Corporation or a Company, as the case may be; and

(d) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (b) the entire amount of non-refundable withdrawal if any made from Corporation's contribution or the Company's contribution to the provident Fund account and interest accrued thereon, prior to the date of final settlement of the Provident Fund account, together with interest at the rate of twelve per cent per annum from the date of withdrawal till the date of settlement of the provident Fund account together with a further simple interest on the said amount at the rate of six per cent per annum from the date of settlement of the provident Fund account till the date of refund; or

(2) (a) have retired on or after the 1st day of November, 1993 but before the notified date; and

- (b) exercise an option in writing within one hundred and twenty days from the notified date to become member of the Fund; and
- (c) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (b), the entire amount of the Corporation's contribution or the Company's contribution as the case may be, to the provident Fund and interest accrued thereon together with a further simple interest at the rate of twelve per cent per annum on the said amount from the date of settlement of the Provident Fund account till the date of refund of the aforesaid amount to the Corporation or the Company as the case may be; and
- (d) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (b), the entire amount of non-refundable withdrawal, if any made from the Corporation's contribution or the Company's contribution as the case may be to the provident Fund account and interest accrued thereon, prior to the date of final settlement of the Provident Fund account, together with interest at the rate of twelve per cent per annum from the date of withdrawal till the date of settlement of Provident Fund account together with a further simple interest on the said amount at the rate of six per cent per annum from the date of settlement of the Provident Fund account till the date of refund; or
- (3) (a) are in the service of the Corporation or a Company before the notified date and continue to be in the service of the Corporation or a Company on or after the notified date; and
- (b) exercise an option in writing within one hundred and twenty days from the notified date to become member of the Fund; and
- (c) authorise the trust of the Provident Fund to transfer the entire contribution of the Corporation or of the Company to their Provident Fund along with the interest accrued thereon to the credit of the Fund constituted for the purpose under paragraph 5; and
- (d) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in sub-paragraph (b), to the Corporation or a Company, as the case may be, any non refundable withdrawal made from the Corporation's contribution or the Company's contribution to the Provident Fund account and interest accrued thereon together with interest at the rate of twelve per cent per annum from the date of such withdrawal until the date of its refund to the Corporation or the company; or
- (4) join the service of the Corporation or a Company as the case may be, on or after the notified date; or
- (5) were in the service of the Corporation or a Company, as the case may be during any time on or after the 1st day of November, 1993 and had died after retirement but before the notified date, their family shall be entitled for the amount of pension payable to them from the date on which they would have been entitled to pension under this scheme had they been alive till the date on which they died, if the family of the deceased,
- (a) exercises an option in writing within one hundred and twenty days from the notified date to become member of the Fund; and
- (b) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (a) above, the entire amount of the Corporation's contribution or a Company's contribution to the Provident Fund and interest accrued thereon together with a further simple interest at the rate of twelve per cent per annum from the date of settlement of the Provident Fund account till the date of refund of the aforesaid amount to the Corporation or to the Company as the case may be: and
- (c) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (a) above, any non-refundable withdrawal made from the Corporation's contribution or a Company's contribution to the Provident Fund account and interest accrued thereon prior to the date of final settlement of the Provident Fund account together with further simple interest on the said amount at the rate of twelve per cent per annum from the date of withdrawal till the date of refund of the aforesaid amount to the Corporation or to a Company, as the case may be; or
- (6) joined the service of the Corporation or a Company on or after the 1st day of November, 1993 but who have died while in the service of the Corporation or the Company, as the case may be, before the notified date, their family shall be entitled to the family pension under this scheme. Provided that

family of such a deceased employee refund within one hundred and eighty days from the notified date, the entire amount of the Corporation's contribution or a Company's contribution to the Provident Fund, if any, and interest accrued thereon together with further simple interest at the rate of twelve per cent per annum from the date of settlement of the Provident Fund account till the date of refund of the aforesaid amount to the Corporation or the Company, as the case may be; or

Provided further that the family of such a deceased employee shall apply in writing for grant of family pension; or

(7) were in the service of the Corporation or a Company, as the case may be, during any time on or after the 1st day of January, 1986 and had died while in service on or before the 31st day of October, 1993 or had retired on or before the 31st day of October, 1993 but died before the notified date in which case their family shall be entitled to the family pension under this scheme, if the family of the deceased,—

- (a) exercises an option in writing within one hundred and twenty days from the notified date to become member of the Fund;
- (b) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (a) above, the entire amount of the Corporation's contribution or the Company's contribution, as the case may be, to the Provident Fund and interest accrued thereon together with a further simple interest at the rate of six per cent per annum from the date of settlement of the Provident Fund account till the date of refund of the aforesaid amount to the Corporation or the Company as the case may be; and
- (c) refund within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (a), the entire amount of non-refundable withdrawal from the Corporation's contribution or the Company's contribution as the case may be, to the Provident Fund account and interest accrued thereon, prior to the date of final settlement of Provident Fund account, together with interest at the rate of twelve per cent per annum from the date of withdrawal till the date of settlement of Provident Fund account together with a further simple interest on the said amount at the rate of six per cent per annum from the date of settlement to

the Provident Fund account till the date of refund; or

(8) joined the service of the Corporation or a Company on or before the 31st day of October, 1993 and who died while in service on or after the 1st day of November, 1993 but before the notified date in which case their families shall be entitled to family pension under this scheme if the family of the deceased employee,—

- (a) exercises an option in writing within one hundred and twenty days from the notified date to become a member of the Fund of the Corporation or a Company, as the case may be; and
- (b) refunds within sixty days from the date of expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (a) above, the entire amount of the Corporation's contribution or a Company's contribution, as the case may be, to the Provident Fund, including interest accrued thereon together with a further simple interest at the rate of twelve per cent per annum from the date of settlement of the Provident Fund account of the employee till the date of refund of the aforesaid amount to the Corporation or the Company as the case may be; and
- (c) refunds within sixty days after the expiry of the said period of one hundred and twenty days specified in clause (a), the entire amount of non-refundable withdrawal, if any, made from the Corporation's contribution or the Company's contribution as the case may be, to the Provident Fund account and interest accrued thereon, prior to the date of final settlement of the Provident Fund account, together with interest at the rate of twelve per cent per annum from the date of withdrawal till the date of settlement of the Provident Fund account together with a further simple interest on the said amount at the rate of six per cent per annum from the date of settlement of the Provident Fund account till the date of refund; or

4. Option to subscribe to the Provident Fund.—

(1) Notwithstanding anything contained in sub-paragraph (4) of paragraph 3, an employee who joins the service of the Corporation or a Company, as the case may be, on or after the notified date, at the age of thirty five years or more, may, within a period of ninety days from the date of his appointment elect to forego his right to pension, whereupon this scheme shall not apply to him.

(2) The option referred to in sub-paragraph (1) above and paragraph 3 on exercised, shall be final.

CHAPTER III

FUND

5. Constitution of the Fund.—(i) The Corporation and each Company shall constitute a Fund specified in column (2) of the Table given below, under an irrevocable trust within a period of one hundred and twenty days from the notified date :—

TABLE

Name of the Corporation/Company	Name of Fund
(1)	(2)
(1) General Insurance Corporation of India	General Insurance Corporation (Employees') Pension Fund
(2) National Insurance Company Limited	National Insurance Company (Employees') Pension Fund
(3) The New India Assurance Company Limited	The New India Assurance Company (Employees') Pension Fund
(4) The Oriental Insurance Company Limited	The Oriental Insurance Company (Employees') Pension Fund
(5) United Indian Insurance Company Limited	United India Insurance Company (Employees') Pension Fund

(2) The Fund shall have for its sole purpose the provisions of the payment of pension or family pension in accordance with this scheme to the employee or his family.

(3) The Corporation or the Company, as the case may be, shall be a contributor to the Fund and shall ensure that sufficient sums are placed in it to enable the trust to make due payment to the beneficiaries under this scheme.

6. Liability of the Provident Fund Trust.—The Provident Fund Trust of the Corporation or the Company, as the case may be, shall, immediately after the constitution of the Fund transfer to each of the Fund referred to in paragraph 5 the accumulated balance of the contribution of the Corporation or the Company, to the Provident Fund of the Corporation or the Company and interest accrued thereon upto the date of such transfer in respect of every employee.

7. Composition of the Fund.—Each Fund shall consist of the following, namely:—(1) the contribution by the Corporation or the Company as the case may be, at the rate of ten per cent per month of the pay of the employees.

Explanation.—For the purpose of this paragraph "pay" includes—

(i) the basic pay.

(ii) allowances other than dearness allowance which count for the purposes of making contribution to the Provident Fund and payment of dearness allowance.

(iii) dearness allowance payable on the basic pay and the allowances specified in clause (ii) above, upto Index Number 1148 in the quarterly average of the All India Consumer Price Index for Industrial Workers in the series 1960 = 100; and

(iv) allowances to the extent they count for Provident Fund, house rent allowance, gratuity and for refixation of salary on promotion :

Provided that the Corporation or a Company, as the case may be, shall not make any contribution to the account of the Provident Fund of the employee;

(2) the accumulated contributions of the Corporation or a Company as the case may be to the Provident Fund and interest accrued thereon, upto the date of such transfer in respect of such employees;

(3) the amount consisting of contribution of the Corporation or a Company, as the case may be, alongwith interest refunded by the employees, who had retired before the notified date but who opt for pension in accordance with the provisions contained in this scheme;

(4) the investment in annuities or securities purchased out of the monies of the Fund and interest thereon;

(5) amount of any capital gains arising from the capital assets of the Fund;

(6) the additional annual contribution made by the Corporation or a Company, as the case may be in accordance with provisions contained in paragraph 11 of this scheme;

(7) any income from investments of the amounts credited to the Fund;

(8) the amount consisting of contribution of the Corporation or a Company as the case may be along with interest refunded by the families of the deceased employees;

(9) non-refundable amount of Corporation's contribution or a Company's contribution as the case may be, and interest thereon refunded by the employees.

8. Board of Trustees.—(1) The Board of trustees shall consist of such number of persons not less than three and not more than nine, as may be determined by the Corporation or a Company, as the case may be, to be appointed by the Corporation or the Company as the case may be.

(2) The power to appoint the trustees shall be vested with the Corporation or a Company, as the case may be and all such appointments shall be made in writing.

(3) The Corporation or a Company, as the case may be, shall nominate one of the trustees to be the Chairman of the Board of trustees. The Corporation or a Company, as the case may be, shall also nominate a trustee to be an alternate Chairman who shall act as Chairman in the absence of the Chairman.

9. Trustees to carry out the directions of the Corporation or a Company.—The trustees shall comply with all such directions, as may be given by the Corporation or a Company, as the case may be, for the proper functioning of the Fund.

10. Books of accounts of the Fund.—(1) The accounts of the Fund shall contain the particulars of all financial transactions relating to the Fund in such form as may be specified by the Corporation or a Company, as the case may be.

(2) Within one hundred eighty days from the closing of each financial year, the Trust shall prepare a financial statement indicating therein general account of the assets and liabilities of the trust and forward a copy of the same to the Corporation or a Company, as the case may be.

(3) The accounts of the Fund of the Corporation shall be audited in accordance with the provisions of section 619 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956).

(4) The accounts of the Fund of a Company shall be audited in accordance with the provisions of section 224 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956).

11. Actuarial investigation of the Fund.—The Corporation or a Company, as the case may be shall cause an investigation to be made by an Actuary into the financial condition of the Fund every financial year, on the 31st day of March, and make such additional annual contributions to the Fund as may be required to secure payment of the benefits under this scheme:

Provided that the Corporation or a Company, as the case may be cause an investigation to be made by an actuary into the financial condition of the Fund as on the 31st day of March immediately following the financial year in which the Fund is constituted.

12. Investment of Fund.—All monies contributed to the Fund or received or accruing by way of interest or otherwise to the Fund, shall, within a reasonable time from the date of the contribution, receipt or accrual, as the case may be, be dealt in accordance with rule 85 and clause (ii) of rule 89 of the Income-tax Rules 1962, made under the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) and payable both in respect of capital and interest in India as applicable, in the Fund.

13. Payment out of the Fund.—The payment of benefits by the trust shall be administered as follows, namely:—

(a) the trust shall purchase immediate annuities from the Life Insurance Corporation of India in respect of each employee or his family as the case may be at the time he or his family becomes eligible for the benefits under this scheme or, in respect of family pension, on his death;

(b) the trust shall, subject to the availability of additional sums in the Fund, to be provided by the Corporation or by the Company, as the case may be, as required under sub-paragraph (3) of paragraph 5, purchase additional annuity as and when it becomes necessary to revise upwards the benefits payable in accordance with this scheme;

(c) the trust shall in the event of the benefits payable under this scheme being revised downwards for any reason whatsoever credit the benefits received from the Life Insurance Corporation of India under the annuities purchased as exceed the benefits payable under this scheme, to the Fund.

CHAPTER—IV QUALIFYING SERVICE

14. Qualifying Service.—Subject to the other condition contained in this scheme, an employee who has rendered a minimum ten years of service in the Corporation or a Company, on the date of retirement shall qualify for pension.

15. Commencement of qualifying service.—Subject to the provisions contained in this scheme, qualifying service of an employee shall commence from the date he takes charge of the post to which he is first appointed on regular basis.

16. Counting of service on probation.—Service on probation against a post in the Corporation or concerned Company if followed by confirmation in the same or another post shall qualify.

17. Counting of period spent on leave.—All leave during service in the Corporation or concerned company, for which leave salary is payable shall count as qualifying service:

Provided that extra-ordinary leave on loss of pay granted on medical certificate or on account of employee's inability to join duty due to civil commotion, not exceeding twelve months during the entire service, shall also count as qualifying service.

18. Broken period of service of less than one year.—If the period of service of an employee includes broken period of service of less than one year, then, if such broken period is more than six months it shall be treated as one year and if such broken period is six months or less it shall be ignored.

19. Counting of period spent on training.—Period spent by an employee on training in the Corporation or a Company, as the case may be immediately before his appointment shall count as qualifying service.

20. Counting of past service in the erstwhile insurer.—Period of continuous service of a "transferred employee" with an insurer, shall qualify for pension:

Provided that such 'transferred employee' was not eligible for any pension, annuity, gratuity in lieu of pension or such other superannuation benefit in lieu of pension from the insurer in respect of the service with such insurer.

21. Period of suspension.—Period of suspension of an employee pending enquiry shall count for qualifying service where, on conclusion of such enquiry, he has been fully exonerated or the suspension is held to be wholly unjustified and in other cases, the period of suspension shall not count as qualifying service unless the competent authority passing the order under General Insurance (Conduct, Discipline and

Appeal) Rules framed by the Board of the Corporation or a Company in this behalf, expressly declares at that time that it shall count, to such extent as such authority may declare.

22. Forfeiture of service.—Resignation or dismissal or removal or termination or compulsory retirement of an employee from the service of the Corporation or a Company shall entail forfeiture of his entire past service and consequently shall not qualify for pensionary benefits.

23. Period of deputation to foreign service.—An employee deputed on foreign service to the United Nations or any other foreign body or organisation may, at his option,—

- (a) Pay pension contribution in respect of his foreign service and count such service as qualifying service under this scheme; or
- (b) avail of the retirement benefits admissible under the rules of the foreign employer and not count such service as qualifying service under this scheme:

Provided that where an employee opts for sub-paragraph (b), retirement benefit shall be payable to him in India in rupees from such date and in such manner as the Corporation or the concerned Company, as the case may be may, by order, specify.

24. Military Service.—An employee who has rendered military service before appointment in the Corporation or the concerned Company shall continue to draw the military pension, if any, and the military service rendered by the employee shall not count as qualifying service for pension.

25. Period of deputation to an organisation in India.—Period of deputation of an employee to another organisation within India shall count as qualifying service:

Provided the organisation to which he is deputed or the employee pays the pensionary contributions at the rates specified in sub-paragraph (1) of paragraph 7 of this scheme to the Corporation or the concerned Company.

26. Addition to qualifying service in special circumstances.—An employee shall be eligible to add to his service qualifying for superannuation pension (but not for any other class of pension) the actual period not exceeding one-fourth of the length of his service or the actual period by which his age at the time of recruitment exceeded twenty-eight years, or a period of five years, whichever is less, if the service or post to which the employee is appointed is one—

- (a) for which post-graduate research, or specialist qualification or experience in scientific, technological or professional fields, is essential; and
- (b) to which candidates of more than twenty-eight years of age are normally recruited, and
- (c) for which the candidate was given age relaxation over and above the maximum age limit fixed by the Corporation or the Company on account of his possessing higher qualification or experience:

Provided that this concession shall not be admissible to an employee unless his actual qualifying service at the time he quits the service in Corporation or a company, as the case may be is not less than ten years:

Provided further that this concession shall be admissible only if the recruitment procedure in respect of the said service or post contains a specific provision that the service or post is one which carries the benefit of this paragraph.

27. Condonation of interruption in service.—(1) In the absence of a specific indication to the contrary in the service records, an interruption between two spells of service in the Corporation or a Company, as the case may be rendered by an employee including service, counted in terms of the various provisions contained in this scheme shall be treated as automatically condoned and the pre-interruption service treated as qualifying service.

(2) Nothing in sub-paragraph (1) shall apply to an interruption caused by the resignation or dismissal or removal or compulsory retirement or termination from service.

(3) The period of interruption referred to in sub-paragraph (2) shall not count as qualifying service.

28. Counting of service rendered on permanent part time basis in certain cases.—(1) In the case of an employee, who immediately prior to his appointment on a whole-time basis was employed on a permanent part-time basis in the service of the Corporation or a Company and was contributing to the Provident Fund, such service rendered by him on permanent part-time basis shall be counted as qualifying service;

(2) The length of qualifying service of the employee referred to in sub-paragraph (1) for the purpose of calculating the amount of pension shall be determined in accordance with Appendix II.

CHAPTER V

CLASSES OF PENSION

29. Superannuation Pension.—Superannuation pension shall be granted to an employee who has retired on his attaining the age specified in paragraph 12 of General Insurance (Rationalisation and Revision of Pay Scales and Other Conditions of Service of Supervisory, Clerical and Subordinate Staff) Scheme, 1974 and in paragraph 4 of General Insurance (Termination, Superannuation and Retirement of Officers and Development Staff) Scheme, 1976.

30. Pension on voluntary retirement.—(1) At any time after an employee has completed twenty years of qualifying service, he may, by giving notice of not less than ninety days, in writing to the appointing authority, retire from service:

Provided that this sub-paragraph shall not apply to an employee who is on deputation unless after having been transferred or having returned to India he has resumed charge of the post in India and has served for a period of not less than one year:

Provided further that this sub-paragraph shall not apply to an employee who seeks retirement from service for being absorbed permanently in an autonomous body or a public sector undertaking to which he is on deputation at the time of seeking voluntary retirement.

(2) The notice of voluntary retirement given under sub-paragraph (1) shall require acceptance by the appointing authority:

Provided that where the appointing authority does not refuse to grant the permission for retirement before the expiry of the period specified in the said notice, the retirement shall become effective from the date of expiry of the said period.

(3) (a) An employee referred to in sub-paragraph (1) may make a request in writing to the appointing authority to accept notice of voluntary retirement of less than ninety days giving reasons therefor;

(b) on receipt of request under clause (a), the appointing authority may, subject to the provisions of sub-paragraph (2), consider such request for the curtailment of the period of notice of ninety days on merits and if it is satisfied that the curtailment of the period of notice will not cause any administrative inconvenience, the appointing authority may relax the requirement of notice of ninety days on the condition that the employee shall not apply for commutation of a part of his

pension before the expiry of the notice of ninety days.

(4) An employee who has elected to retire under this paragraph and has given necessary notice to that effect to the appointing authority shall be precluded from withdrawing his notice except with the specific approval of such authority :

Provided that the request for such withdrawal shall be made before the intended date of his retirement.

(5) The qualifying service of an employee retiring voluntarily under this paragraph shall be increased by a period not exceeding five years, subject to the condition that the total qualifying service rendered by such employee shall not in any case exceed thirty three years and it does not take him beyond the date of retirement.

(6) The pension of an employee retiring under this paragraph shall be based on the average emoluments as defined under clause (d) of paragraph 2 of this scheme and the increase, not exceeding five years in his qualifying service, shall not entitle him to any notional fixation of pay for the purpose of calculating his pension.

Explanation.—For the purpose of this paragraph, the appointing authority shall be the appointing authority specified in Appendix-I to this scheme.

31. Invalid Pension.—(1) Invalid pension may be granted to an employee who,—

- (a) has rendered minimum ten years of service; and
- (b) retires from the service on account of any bodily or mental infirmity which permanently incapacitates him from the service.

(2) An employee applying for an invalid pension shall submit a medical certificate of incapacity from a medical officer approved by the Corporation or a Company as the case may be.

32. Compassionate Allowance.—(1) An employee who is dismissed or removed or compulsorily retired or terminated from service shall forfeit his pension :

Provided that the authority competent to dismiss or remove or compulsorily retire or terminate him from service may, if—

- (i) such dismissal, removal, compulsory retirement or termination is on or after the 1st day of November, 1993 and
- (ii) the case is deserving a special consideration, sanction a compassionate allowance not exceeding two-thirds of pension which would have been admissible to him on the basis of

qualifying service rendered upto the date of his dismissal, removal, compulsory retirement or termination.

(2) The compassionate allowance sanctioned under the proviso to sub-paragraph (1) shall not be less than the amount of minimum pension payable under paragraph 35 of this scheme.

33. Payment of pension or family pension in respect of employees who retired or died between 1-1-1986 and 31-10-1993.—(1) Employees who have retired from the service of the Corporation or a Company, as the case may be between the 1st day of January, 1986 and the 31st day of October, 1993 shall be eligible for pension with effect from the 1st day of November, 1993.

(2) The family of a deceased employee governed by the provisions contained in sub-paragraph (7) of paragraph 3 shall be eligible for family pension with effect from 1st day of November, 1993.

CHAPTER VI

RATE OF PENSION

34. Amount of Pension.—(1) In respect of employees who retired between the 1st day of January, 1986 but before the 31st day of July, 1987, basic pension and additional pension will be updated as per the formula given in Appendix-III.

(2) In the case of an employee retiring in accordance with the provisions of the relevant rationalisation scheme after completing the qualifying service of not less than thirty three years, the amount of basic pension shall be calculated at fifty per cent of the average emoluments.

(3) (a) Additional pension shall be fifty per cent of the allowances drawn by an employee during the last ten months of his service.

(b) No dearness relief shall be paid on the amount of additional pension.

Explanation.—For the purposes of this sub-paragraph “allowances” means allowances which are admissible to the extent counted for the following purpose only namely :—

- (i) making contributions to the Provident Fund;
- (ii) grant of house rent allowances;
- (iii) payment of gratuity; and
- (iv) re-fixation of salary on promotion.

(4) Pension as computed being the aggregate of sub-paragraphs (2) and (3) above shall be subject to the minimum pension as specified in this scheme.

(5) An employee who has commuted the admissible portion of his pension as per the provisions of paragraph 40 of this scheme shall receive only the balance of pension, monthly.

(6) (a) In the case of an employee retiring before completing a qualifying service of thirty-three years, but after completing a qualifying service of ten years, the amount of pension shall be proportionate to the amount of pension admissible under sub-paragraphs (2) and (3) and in no case the amount of pension shall be less than the amount of minimum pension specified in this scheme.

(b) Notwithstanding anything contained in this scheme, the amount of invalid pension shall not be less than the ordinary rate of family pension which would have been payable to his family in the event of his death while in service.

(7) The amount of pension finally determined under this paragraph shall be expressed in whole rupee and where the pension contains a fraction of a rupee, it shall be rounded off to the next higher rupee.

35. Minimum Pension.—The amount of minimum pension shall be,—

- (a) rupees three hundred and seventy five per month in respect of an employee who had retired before the 1st day of November, 1993; and
- (b) rupees seven hundred and twenty per month in respect of an employee who retires on or after the 1st day of November, 1993.

36. Dearness Relief.—(1) Dearness Relief shall be granted on basic pension or family pension or invalid pension or on compassionate allowance in accordance with the rates specified in Appendix IX.

(2) The dearness relief shall also be allowed on the full basic pension even after commutation.

37. Determination of the period of ten months for average emoluments.—(1) The period of the preceding ten months for the purpose of average emoluments shall be reckoned from the date of retirement.

(2) In the case of voluntary retirement the period of preceding ten months for the purposes of average emoluments shall be reckoned from the date on which the employee voluntarily retires.

(3) In the case of dismissal or removal or compulsory retirement or termination of service the period of preceding ten months for the purpose of average emoluments shall be reckoned from the date on which

the employee is dismissed or removed or compulsorily retired or terminated by the Corporation of the Company.

(4) If during the last ten months of the service, an employee had been absent from duty on extraordinary leave on loss of pay or had been under suspension and the period whereof does not count as service, the aforesaid period of the extraordinary leave or suspension shall not be taken into account in the calculation of the average emoluments and an equal period before the ten months shall be included.

CHAPTER VII

FAMILY PENSION

38. Family Pension.—(1) Without prejudice to the provisions contained in this scheme where an employee dies—

- (a) after completion of one year of continuous service; or
- (b) before completion of one year of continuous service, provided the deceased employee concerned immediately prior to his appointment to the service or post was examined by the medical officer approved by the Corporation or the Company and declared fit for employment in the Corporation or such Company, as the case may be; or
- (c) after retirement from service and was on the date of death in receipt of a pension, or compassionate allowance, the family of the deceased shall be entitled to family pension, the amount of which shall be determined in accordance with the Appendix V.

(2) The amount of family pension shall be fixed at monthly rates and be expressed in whole rupees and where the family pension contains a fraction of a rupee, it shall be rounded off to the next higher rupee :

Provided that in no case a family pension in excess of the maximum prescribed under this scheme shall be allowed.

- (3) (a) (i) where an employee, who is not governed by the Workmen's Compensation Act, 1923 (8 of 1923), dies while in service after having rendered not less than seven years continuous service, the rate of family pension payable to the family shall be equal to fifty per cent of the pay last drawn or twice the family pension admissible under sub-paragraph (1), whichever is less, and

the amount so admissible shall be payable from the date following the date of death of the employee for a period of seven years, or for a period upto the date on which the deceased employee would have attained the age of sixty five years had he survived, whichever is less;

(ii) In the event of death of an employee after retirement, the family pension as determined under clause (a) or clause (b) of this sub-paragraph shall be payable for a period of seven years, or for a period upto the date on which the retired deceased employee would have attained the age of sixty five years had he survived, whichever is less;

(b) (i) Where an employee, who is governed by the Workmen's Compensation Act, 1923 (8 of 1923), dies while in service after having rendered not less than seven years continuous service, the rate of family pension payable to the family shall be equal to fifty per cent of the pay last drawn or one and half times the family pension admissible under sub-paragraph (1), whichever is less;

(ii) the family pension so determined under sub-clause (i) shall be payable for the period mentioned in clause (a);

(c) after the expiry of the period referred to in clause (a), the family, in receipt of family pension under that clause or clause (b) shall be entitled to family pension at the rate admissible under sub-paragraph (1).

(4) Notwithstanding anything contained in this scheme, where the family of a deceased employee opts for pension in accordance with sub-paragraph (5) of paragraph 3 or is governed by the provisions contained in sub-paragraph (6) or (7) or (8) of paragraph 3, such family of the deceased shall be eligible for family pension under this scheme.

39. Period of payment of family pension.—(1) The period for which family pension is payable shall be,—

(a) in the case of a widow or a widower, upto the date of death or remarriage, whichever is earlier;

(b) in the case of a son, until he attains the age of twenty five years; and

(c) in the case of an unmarried daughter, until she attains the age of twenty five years or until she gets married, whichever is earlier ;

Provided that if the son or daughter of an employee is suffering from any disorder or disability of mind or is physically crippled or disabled so as to render him or her unable to earn a living even after attaining the age of twenty five years, the family pension shall be payable to such son or daughter for life subject to the following conditions, namely :—

(i) if such son or daughter is one among two or more children of the employee, the family pension shall be initially payable to the minor children in the order set out in Clause (e) of sub-paragraph (1) until the last minor child attains the age of twenty-five years and thereafter the family pension shall be resumed in favour of the son or daughter suffering from disorder or disability of mind or who is physically crippled or disabled and shall be payable to him or her for life;

(ii) if there are more than one such children suffering from disorder or disability of mind or who are physically crippled or disabled, the family pension shall be paid in the order of their birth and the younger of them will get the family pension only after the elder next above him or her ceases to be eligible ;

Provided that where the family pension is payable to such twin children it shall be paid in the manner set out in clause (f) of sub-paragraph (1);

(iii) the family pension shall be paid to such son or daughter through the guardian as if he or she were a minor except in the case of a physically crippled son or daughter who has attained the age of majority;

(iv) before allowing the family pension for life to any such son or daughter, the Competent Authority shall satisfy that the handicap is of such a nature as to prevent him or her from earning his or her livelihood and the same shall be evidenced by a certificate obtained from a medical officer approved by the Corporation or the Company, setting out, as far as possible, the exact mental or physical condition of the child;

(v) the person receiving the family pension as guardian of such son or daughter or such a son or daughter not receiving the family pension through a guardian shall produce every three years a certificate

from a medical officer approved by the Corporation or the concerned Company to the effect that he or she continues to suffer from disorder or disability of mind or continues to be physically crippled or disabled.

Explanation.—The grant of family pension to disabled children beyond the age limit specified in this sub-paragraph is subject to the following conditions, namely :—

- (i) A daughter shall become ineligible for family pension under this sub-paragraph from the date she gets married;
- (ii) The family pension payable to such son or daughter shall be stopped if he or she starts earning his or her livelihood. In such cases it shall be the duty of the guardian or son or daughter to furnish a certificate to the Corporation or the concerned Company as the case may be every month that—
 - (a) he or she has not started earning his or her livelihood;
 - (b) in case of daughter that she has not yet married;
- (d) if a deceased employee or pensioner leaves behind a widow or widower, the family pension shall become payable to the widow or widower, failing which to the eligible child;
- (e) family pension to the children shall be payable in the order of their birth and the younger of them shall not be eligible for family pension unless the elder next above him or her has become ineligible for the grant of family pension :
- (f) where the family pension is payable to twin children, it shall be paid to such children in equal shares :

Provided that where the family pension is payable to twin children it shall be paid in the manner set out in clause (f) of sub-paragraph (1);

Provided that where one such child ceases to be eligible, his or her share shall revert to the other child and where both of these cease to be eligible, the family pension shall be payable to the next eligible single child or twin children, as the case may be.

- (2) Where a deceased employee or a pensioner leaves behind more children than one, the eldest eligible child shall be entitled to the family pension for the period mentioned in clauses (b) and (c) of

sub-paragraph (1), as the case may be, and after the expiry of that period the next child shall become eligible for the grant of the family pension.

- (3) Where family pension is granted under this paragraph to a minor, it shall be payable to the guardian on behalf of the minor.

(4) In case both wife and husband are employees of the Corporation or the concerned Company and are governed by the provisions of this scheme and one of them dies while in service or after retirement, the family pension, in the case of the deceased shall be payable to the surviving husband or wife and in the event of death of the husband or wife, the surviving child or children shall be granted the two family pensions in respect of the deceased parents subject to the limits specified below, namely :—

- (a) If the surviving child or children is or are eligible to draw two family pensions at the rates mentioned in sub-clause (i) of clause (a) or sub-clause (i) of clause (b) of sub-paragraph (3) of paragraph 38, the amount of both pensions shall be limited to two thousand five hundred rupees only per mensem in respect of an employee who retired or died while in service prior to the 1st day of November, 1993 and four thousand eight hundred rupees per mensem only in case of an employee who retired or died on or after the 1st day of November, 1993;
- (b) if one of the family pensions ceases to be payable at rates mentioned in sub-clause (i) of clause (a) or sub-clause (i) of clause (b) of sub-paragraph (3) of paragraph 38 and in lieu thereof the family pension at rate mentioned in sub-paragraph (1) of paragraph 38 becomes payable, the amount of both the pensions shall also be limited to two thousand five hundred rupees only per mensem in respect of employees who retired or died while in service prior to the 1st day of November, 1993 and four thousand eight hundred rupees per mensem in the case of employees who retired or died on or after the 1st day of November, 1993;
- (c) if both the family pensions are payable at the rate mentioned in sub-paragraph (1) of paragraph 38 the amount of the two pensions shall be limited to one thousand two hundred and fifty rupees per mensem in the case of employees who retired or died while in service prior to the 1st day of November, 1993 and two thousand four hundred rupees per mensem in respect of employees who retired or died on or after the 1st day of November, 1993;

(5) (a) where the family pension is payable to more widows than one, the family pension shall be paid to the widows in equal shares;

(b) on the death of a widow, her share of the family pension shall become payable to her eligible child :

Provided that if the widow is not survived by any child, her share of the family pension shall not lapse but shall be payable to the other widows in equal shares, or if there is only one such other widow, in full, to her;

(c) where the deceased employee or pensioner is survived by a widow but has left behind eligible child or children from another wife who is not alive, the eligible child or children shall be entitled to the share of family pension which the mother would have received if she had been alive at the time of death of the employee or pensioner .

Provided that on the share or shares of family pension payable to such a child or children or to a widow or widows ceasing to be payable, such share or shares shall not lapse, but shall be payable to the other widow or widows or to the other child or children otherwise eligible, in equal shares, or if there is only one widow or child, in full, to such widow or child;

(d) where the family pension is payable to twin children it shall be paid to such children in the manner specified in clause (f) of sub-paragraph (1) above;

(e) except as provided in this sub-paragraph, the family pension shall not be payable to more than one member of the family at the same time.

(6) Where a female employee or male employee dies leaving behind a judicially separated husband or widow and no child or children, the family pension in respect of the deceased shall be payable to the person surviving :

Provided that where in case the judicial separation is granted on the ground of adultery and the death of the employee takes place during the period of such judicial separation, the family pension shall not be payable to the person surviving if such person surviving was held guilty of committing adultery.

(7) (a) where a female employee or male employee dies leaving behind a judicially separated husband or widow with a child or children, the family pension payable in respect of the

deceased shall be payable to the surviving person provided he or she is the guardian of such child or children;

(b) where the surviving person has ceased to be the guardian of such child or children, such family pension shall be payable to the person who is the actual guardian of such child or children.

(8) If the son or unmarried daughter eligible for the grant of family pension, has attained the age of eighteen years, the family pension may be paid to such son or unmarried daughter directly.

(9) (a) if a person, who, in the event of death of a employee while in service, is eligible to receive family pension under this scheme, is charged with the offence of murdering the employee or for abetting in the commission of such an offence, the claim of such a person, including other eligible member or members of the family to receive the family pension, shall remain suspended till the conclusion of the criminal proceedings instituted against him;

(b) if on the conclusion of the criminal proceedings referred to in (a) above, the person concerned—

(i) is convicted for the murder or abetting in the murder of the employee, such a person shall be debarred from receiving the family pension which shall be payable to the other eligible member of the family, from the date of death of the employee;

(ii) is acquitted of the charge of murder or abetting in the murder of the employee, the family pension shall be payable to such person from the date of death of the employee;

(c) the provisions of sub-clauses (a) and (b) above shall also apply for the family pension becoming payable on the death of an employee after his retirement.

CHAPTER VIII

COMMUTATION

40. Commutation.—(1) An employee shall be entitled to commute for a lump sum payment a fraction not exceeding one-third of his pension;

Provided that in respect of an employee who is governed by sub-paragraph (5) of paragraph 3 of this scheme, the family of such employee shall also be entitled to commute for a lump sum

payment, a fraction not exceeding one-third of the pension admissible to the employee.

(2) An employee shall indicate the fraction of pension which he desires to commute and may either indicate the maximum limit of one-third pension or such lower limit as he may desire to commute.

(3) If fraction of pension to be commuted results in fraction of rupee, such fraction of a rupee shall be ignored for the purpose of commutation.

(4) The lump sum payable to an applicant shall be calculated in accordance with the Table given below:—

TABLE
Commutation Values for a pension of Re. one per annum

Age next birthday	Commutation value expressed as number of year's purchase	Age next birth day	Commutation value expressed as number of year's purchase
17	19.20	51	12.95
18	19.20	52	12.66
19	19.11	53	12.35
20	19.01	54	12.05
21	18.91	55	11.73
22	18.81	56	11.42
23	18.70	57	11.10
24	18.59	58	10.78
25	18.47	59	10.46
26	18.34	60	10.13
27	18.21	61	9.81
28	18.07	62	9.48
29	17.93	63	9.15
30	17.78	64	8.82
31	17.62	65	8.50
32	17.46	66	8.17
33	17.29	67	7.85
34	17.11	68	7.53
35	16.92	69	7.22
36	16.72	70	6.91
37	16.52	71	6.60
38	16.31	72	6.30
39	16.09	73	6.01
40	15.87	74	5.72
41	15.64	75	5.44
42	15.40	76	5.17
43	15.15	77	4.90
44	14.90	78	4.65
45	14.64	79	4.40
46	14.37	80	4.17
47	14.10	81	3.94
48	13.82	82	3.72
49	13.54	83	3.52
50	13.25	84	3.32
		85	3.13

Notes:

(1) The Table above indicates the commuted value of pension expressed as number of year's purchase with reference to the age of the pensioner as on his next birthday. The commuted value in the case of an employee retiring at the age of fifty-eight years is 10.46 year's purchase and, therefore, if he commutes rupees one hundred from his pension within one year of retirement, the lump sum amount payable to him works out to Rs. $100 \times 10.46 \times 12 = \text{Rs. } 12,552$.

(2) An employee who had commuted the admissible portion of pension is entitled, to have the commuted portion of pension restored after the expiry of a period of fifteen years from the date of commutation.

(3) An applicant who is authorised a superannuation pension, voluntary retirement pension, invalid pension or Compassionate Allowance shall be eligible to commute a fraction of his pension under this scheme.

(4) In the case of a pensioner eligible for superannuation pension or pension on voluntary retirement, no medical examination shall be necessary, if the application for commutation is made within one year from the date of retirement. However, if such a pensioner applies for commutation of pension after one year from the date of his retirement, the same will be permitted subject to medical examination.

Explanation.—An applicant who—

- (i) retires on invalid pension under paragraph 31 of this scheme, or
- (ii) is in receipt of compassionate allowance under paragraph 32 of this scheme,

shall be eligible to commute a fraction of his pension subject to the limit specified in sub-paragraph (i) after he has been declared fit by the medical officer approved by the Corporation or the Company concerned.

(5) The commutation of pension shall become absolute in the case of an employee—

- (a) retiring on superannuation or voluntary, retirement who submits an application for commutation of pension before the date of retirement, on the date following the date of retirement;

Provided that the employee governed by sub-paragraph (3) of paragraph 30 shall not apply for commutation of a part of his pension before the expiry of the notice of ninety days and the commutation of pension

shall become absolute only on the expiry of the period of the notice referred to in sub paragraph (i) of the paragraph 30;

- (b) retiring on Superannuation or on voluntary retirement, if he applies for commutation of Pension after the date of retirement but before completion of one year from the date of retirement, on the date the application for commutation is received by the competent authority;
- (c) retiring on superannuation or on voluntary retirement, if he applies for commutation of pension after one year from the date of retirement, on the date of the medical certificate given by a medical officer approved by the Corporation or a Company concerned;
- (d) who has retired prior to the 1st day of November, 1993 and who opts to be governed by this scheme, on the 1st day of November, 1993, where the application for commutation is made within the period specified by clause (b) of Sub-paragraph (1) of paragraph 3;
- (e) who was in the service of the Corporation or a Company on or after the 1st day of November, 1993 but who retired prior to the publication of this scheme, on the day immediately following the age of this retirement, where the application is made within the period specified by clause (b) of sub-paragraph (2) of paragraph 3;
- (f) who retired on or after the 1st day of November, 1993 but died prior to the notified date, on the day immediately following the date of his retirement where the application for commutation is made by the family of the deceased within the period specified by clause (a) of sub-paragraph (5) of paragraph 3;
- (g) in respect of whom invalid pension under paragraph 31 or compassionate allowance under paragraph 32 is admissible, commutation shall become absolute on the date of the medical certificate given by the medical officer approved by the Corporation or Company concerned.

CHAPTER—IX**GENERAL CONDITIONS**

41. Pension subject to future good conduct.—Future good conduct shall be an implied condition of every grant of pension and its continuance under this scheme.

42. **Withholding or withdrawal of Pension.**—The competent authority may by order in writing withhold or withdraw pension or a part thereof, whether permanently or for a specified period, if the pensioner is convicted of a serious crime or is found guilty of grave misconduct :

Provided that where a part of pension is withheld or withdrawn the amount of such pension shall not be reduced below the minimum pension per mensem payable under this scheme.

43. **Conviction by Court.**—Where a pensioner is convicted of a serious crime by a Court of Law, action shall be taken in the light of the judgment of the court relating to such conviction.

44. **Pensioner guilty of grave misconduct.**—In a case not falling under paragraph 43 if the Competent Authority considers that the pensioner is prima facie guilty of grave misconduct, it shall, before passing an order, follow the procedure specified in the General Insurance (Conduct, Discipline and Appeal) Rules framed by the Board of the Corporation or of the Company.

45. **Provisional Pension.**—(1) An employee who has retired on attaining the age of superannuation or otherwise and against whom any departmental or judicial proceedings are instituted or where departmental proceedings are continued, a provisional pension equal to the maximum pension which would have been admissible to him, would be allowed subject to adjustment against final retirement benefits sanctioned to him, upon conclusion of the proceedings but no recovery shall be made where the pension finally sanctioned is less than the provisional pension or the pension is reduced or withheld etc., either permanently or for a specified period.

(2) In such cases the gratuity shall not be paid to such an employee until the conclusion of the proceedings against him. The gratuity shall be paid to him on conclusion of the proceedings subject to the decision of the proceedings. Any recoveries to be made from an employee shall be adjusted against the amount of gratuity payable.

Explanation.—In this chapter,

- (a) the expression 'serious crime' includes a crime involving an offence under the Official Secrets Act, 1923 (19 of 1923);
- (b) The expression "grave misconduct" includes the communication or disclosure of any secret, official code or password or any sketch, plan, model, article, note, document or information such as is mentioned in section 5 of the Official Secrets Act, 1923 (19 of 1923) (which was obtained while holding

office in the Corporation or the Company concerned) so as to prejudicially affect the interests of the general public or the security of the State.

46. **Commutation of pension during departmental or judicial proceedings.**—An employee, against whom the departmental or judicial proceedings have been instituted before the date of his retirement or a person against whom such proceedings are instituted after the date of his retirement, shall not be eligible to commute a fraction of his provisional pension or pension, as the case may be, authorised under this scheme, during the pendency of such proceedings.

47. **Recovery of Pecuniary loss caused to the Corporation or a Company.**—(1) The Competent Authority may withhold or withdraw a pension or a part thereof, whether permanently or for a specified period, and order recovery from pension of the whole or part of any pecuniary loss caused to the Corporation or a Company if in any departmental or judicial proceedings the pensioner is found guilty of grave misconduct or negligence during the period of his service :

Provided that the Board of the Corporation or a Company shall be consulted before any final orders are passed :

Provided further that departmental proceedings, if instituted while the employee was in service, shall, after the retirement of the employee, be deemed to be proceedings under this paragraph and shall be continued and concluded by the authority by which they were commenced in the same manner as if the employee had continued in service :

Provided also that no departmental or judicial proceedings, if not initiated while the employee was in service, shall be instituted in respect of a cause of action which arose or in respect of an event which took place more than four years before such institution.

(2) Where the competent authority orders recovery of the pecuniary loss from the pension the recovery shall not ordinarily be made at a rate exceeding one-third of pension admissible on the date of retirement of the employee :

Provided that where a part of pension is withheld or withdrawn, the amount of pension drawn by a pensioner shall not be less than the minimum pension payable under this scheme.

48. **Recovery of dues of the Corporation or a Company.**—The Corporation or a Company shall be entitled to recover the dues to the Corporation or a

Company on account of housing loans, advances, license fee, other recoveries and recoveries due to employees' co-operative credit Societies from the commutation value of the pension or the pension or the family pension.

49. Commercial employment after retirement.—

(1) If a pensioner who, immediately before his retirement was holding the post of Deputy Manager or above and wishes to accept any commercial employment before the expiry of two years from the date of his retirement, he shall obtain the previous sanction of the Corporation or a Company, as the case may be, to such acceptance :

Provided that an employee who was permitted by the Corporation or a Company as the case may be to take up a particular form of commercial employment during his leave preparatory to retirement or during refused leave shall not be required to obtain subsequent permission for his continuance in such employment after retirement.

(2) Subject to the provisions of sub-paragraph (3), the Corporation or a Company as the case may be, may by order in writing, on the application by a pensioner, grant, subject to such conditions, if any, as it may deem necessary, permission, or refuse, for reasons to be recorded in the order, permission to such pensioner to take up the commercial employment specified in the application.

(3) In granting or refusing permission under sub-paragraph (2) to a pensioner for taking up any commercial employment, the Corporation or a Company as the case may be shall have regard to the following factors, namely :—

- (a) the nature of the employment proposed to be taken up and the antecedents of the employer;
- (b) whether his duties in the employment which he proposes to take up might be such as to bring him into conflict with the Corporation or a Company as the case may be;
- (c) whether the pensioner while in service had any such dealing with the employer under whom he proposes to seek employment as it might afford a reasonable basis for the suspicion that such pensioner had Shown favours to such employer;
- (d) whether the duties of the commercial employment proposed involve liaison or contact work with the Corporation or a Company as the case may be;
- (e) whether his commercial duties will be such that his previous official position or knowledge or experience under the Corporation or a Company as the case may be could be used

to give the proposed employer an unfair advantage;

(f) the emoluments offered by the proposed employer; and

(g) any other relevant factor.

(4) Where within a period of sixty days of the date of receipt of an application under sub-paragraph (3), the Corporation or a Company as the case may be does not refuse to grant the permission applied for or does not communicate the refusal to the applicant, the Corporation or a Company as the case may be shall be deemed to have granted the permission applied for :

Provided that in any case where defective or insufficient information is furnished by the applicant and it becomes necessary for the Corporation or a Company as the case may be to seek further clarifications or information from him, the period of sixty days shall be counted from the date on which the defects have been removed or complete information has been furnished by the applicant.

(5) Where the Corporation or a Company as the case may be grants the permission applied for subject to any conditions or refuses such permission, the applicant may, within thirty days of the receipt of the order of the Corporation or a Company as the case may be to that effect, make a representation against any such condition or refusal and the Corporation or a Company as the case may be may make such orders thereon as it deemes fit :

Provided that no order other than an order cancelling such condition or granting such permission without any conditions shall be made under this sub-paragraph without giving the pensioner making the representation an opportunity to show cause against the order proposed to be made.

(6) If any pensioner takes up any commercial employment at any time before the expiry of two years from the date of his retirement without the prior permission of the Corporation or a Company as the case may be, or commits a breach of any condition subject to which permission to take up any commercial employment has been granted to him under this paragraph, it shall be competent for the Corporation or a Company as the case may be to declare by order in writing and for reasons to be recorded therein that he shall not be entitled to the whole or such part of the pension and for such periods as may be specified in the order :

Provided that no such order shall be made without giving the pensioner concerned an opportunity of showing case against such declaration :

Provided further that in making any order under this sub-paragraph, the Corporation or a Company as the case may be shall have regard to the following factors, namely :—

- (i) the financial circumstances of the pensioner concerned;
- (ii) the nature of, and the emoluments from, the commercial employment taken up by the pensioner concerned; and
- (iii) any other relevant factor.

(7) Every order passed by the Corporation or a Company of the case may be under this paragraph shall be communicated to the pensioner concerned.

(8) In this paragraph,

(a) the expression “commercial employment” means—

- (i) an employment in any capacity including that of an agent, under a company, co-operative society, firm or individual engaged in trading, commercial, industrial, financial or professional business and includes also a directorship of such company and partnership of such firm, but does not include employment under a body corporate, wholly or substantially owned or controlled by the Central Government or a State Government;
- (ii) setting up practice, either independently or as a partner of a firm, as adviser or consultant in matters in respect of which the pensioner—
 - (A) has no professional qualifications and the matters in respect of which the practice is to be set up or is carried on are relatable to his official knowledge or experience, or
 - (B) has professional qualifications but the matters in respect of which such practice is to be set up are such as are likely to give his clients an unfair advantage by reason of his previous official position, or
 - (C) has to undertake work involving liaison or contact with the offices for officers of the Corporation or a company as the case may be.

Explanation.—For the purpose of this clause, the expression “employment under a co-operative society” includes the holding of any office, whether elective or other wise, such as that of President, Chairman, Manager, Secretary, Treasurer and the like, by whatever name called in such society.

50. Nomination.—(1) The trust shall allow every employee governed by this scheme to make a nomination conferring on one or more persons the right to receive the amount of pensionary benefits under this scheme in the event of his death before that amount becomes payable or, having become payable, has not been paid. Such nomination shall be made in such form as may be specified by the Corporation or the Company, as the case may be from time to time.

(2) If any employee nominates more than one person under sub-paragraph (1), he shall, in his nomination, specify the amount or share payable to each of the nominees in such a manner as to cover the whole of the amount of the pensionary benefits that may be payable in the event of his death.

(3) A nomination made by an employee may, at any time, be modified or revoked by him after giving a written notice to the trustees of his intention of doing so in such form as the Corporation or the Company, as the case may be, may from time to time specify.

(4) A nomination or its revocation or its modification shall take effect to the extent it is valid on the date on which it is received by the trust.

51. Date from which pension becomes payable.—

(1) Except in the case of an employee to whom the provisions of paragraph 42 and paragraph 45 apply a pension other than family pension shall become payable from the date following the date on which an employee retires.

(2) Family pension shall become payable from the date following the date of death of the employee or the pensioner.

(3) Pension including family pension shall be payable for the day on which its recipient dies.

52. Currency in which pension is payable.—All pensions admissible under this scheme shall be payable in rupees in India only.

53. Manner of payment of pension.—A pension fixed at a monthly rate shall be payable monthly on or after the first day of the following month.

54. Power to issue instructions.—The Chairman of the Corporation and Chairman-cum-Managing Director of the concerned Company in consultation with the Chairman of the Corporation may from time to time issue instructions as may be considered necessary for expedient for the implementation of this scheme.

55. Residuary provisions.—Matters relating to pension and other benefits in respect of which no express provision has been made in this scheme shall be governed by the corresponding provisions con-

tained in the Central Civil Services (Pension) Rules, 1972 or the Central Civil Services (Commutation of Pension) Rules, 1981, applicable for Central Government employees.

APPENDIX— I

(See Explanation in paragraph 30)

Category of employees	Appointing Authority
(i) General Manager, Assistant General Manager and equivalent cadres	Chairman of the Corporation
(ii) Manager, Deputy Manager and equivalent cadres	General Manager
(iii) Assistant Manager, Administrative Officer, Asstt. Admin. Officer and equivalent cadres	Assistant General Manager
(iv) Development Officers	Manager
(v) Senior Assistant, Stenographer and equivalent cadres	Manager
(vi) Assistant and equivalent cadres	Deputy Manager
(vii) Subordinate Staff and equivalent cadres	Assistant Manager

APPENDIX—II

(See paragraph 28)

Actual service rendered on Permanent Part-time basis	Length of corresponding qualifying service for each year of service rendered on permanent part-time basis for calculating the amount of pension
(1)	(2)
Less than 3 hours;	1/4th of a year
3 hours or more but less than 4 hours;	3/8th of a year
4 hours or more but less than 5 hours;	1/2 of a year
5 hours or more but less than 6 hours;	5/8th of a year
6 hours or more but less than 7 hours;	3/4th of a year
7 hours or more but less than 8 hours;	7/8th of a year

APPENDIX—III

(See paragraph 34)

The formula of updating basic pension and additional pension in respect of employees who retired between the 1st day of January, 1986 and the 31st day of July, 1987 shall be as under :

(1) Basic Pension shall be increased by an amount of,—

(a) 50 per cent. of first Rs. 1000 of the average emoluments reckonable for pension.

Rs. _____

(b) 45 per cent. of next Rs. 500

Rs. _____

(c) 40 per cent. of the average emoluments reckonable for pension exceeding Rs. 1500

Rs. _____

A. Total of (a+b+c)

Rs. _____ (A)

B. 50 per cent. of the average monthly emoluments for the last 10 months in service prior to retirement.

Rs. _____ (B)

C. Dearness relief at index number 600

Rs. _____ (C)

In the All India Average Consumer Price Index for Industrial Workers in the series 1960=100, on basic pension calculated at (i) above, as per Table given below.

D. Total increased basic pension

(C) x number

Rs. —————-(D)

of years

of qualifying service

= (B) +

(Max 33 years)

33

E. Basic pension as on 1-11-1993 (rounded off to the next higher rupee)

Rs. —————-(E)

- (2) For increase in the additional pension, amount of special allowances counted for making contributions to Provident Fund will be increased with reference to the quantum of special allowances ranking for Provident Fund as per the relevant Rationalisation Scheme.

TABLE I

Rates of dearness relief worked out at index no. 500 in the All India Average Consumer Price Index for Industrial Workers in the series 1960=100 for all classes of employees who retired during the period 1-1-1986 to 31-07-1987:

- (a) Subordinate staff 80.40 per cent. of pension calculated at (i) above
- (b) Supervisory and clerical staff drawing pension upto Rs. 757/- per month 67 per cent. of pension calculated at (i) above
- (c) Supervisory and clerical staff drawing pension o. Rs. 757/- per month and above will be eligible for dearness relief as under :

Amount of basic pension drawn per month (Rs.)	The amount of dearness relief admissible (Rs.)
757 to 796	508.00
797 to 804	534.00
805 to 824	540.00
825 to 844	553.00
845 to 864	567.00
865 to 884	580.00
885 to 904	593.00
905 to 924	607.00
925 to 944	620.00
945 to 964	634.00
965 to 984	647.00
985 to 1004	660.00
1025 to 1044	687.00
1045 to 1064	701.00
1065 to 1084	714.00
1085 and above	727.00

- (d) Officers and Development Staff shall be eligible for dearness relief as under :

- (a) For those drawing basic pension upto Rs. 765 per month; 66 per cent of the amount of pension calculated as at (i) above subject to a maximum of Rs. 500.
- (b) For those drawing basic pension from Rs. 766 to Rs. 1165 per month; Rs. 500
- (c) For those drawing basic pension of Rs. 1166 per month or above; 42.90 per cent of the amount of pension calculated as at (i) above subject to a maximum of Rs. 715

APPENDIX—IV

(See paragraph 36)

Dearness relief on basic pension shall be as under :—

- (1) In the case of employees who retired on or after the 1st day of January, 1986, but before the 1st day of November, 1993, dearness relief shall be payable for every rise or be recoverable for every fall, as the case may be, of every 4 points over 600 points in the quarterly average of the All India Average Consumer Price Index for Industrial Workers in the series 1960=100. Such increase or decrease in dearness relief for every said four points shall be calculated in the manner given below :—

Scale of basic pension per month	The rate of dearness relief as a percentage of basic pension
(1)	(2)
(i) upto Rs. 1250	0.67 per cent.
(ii) Rs. 1251 to Rs. 2,000	0.67 per cent. of Rs. 1250 plus 0.55 per cent. of basic pension in excess of Rs. 1250.
(iii) Rs. 2001 to Rs. 2130	0.67 per cent. of Rs. 1250 plus 0.55 per cent. of the difference between Rs. 2000 and Rs. 1250 plus 0.33 per cent. of basic pension in excess of Rs. 2000.
(iv) above Rs. 2130	0.67 per cent. of Rs. 1250 plus 0.55 per cent. of the difference between Rs. 2000 and Rs. 1250 plus 0.33 per cent. of the difference between Rs. 2130 and Rs. 2000 plus 0.17 per cent. of basic pension in excess of Rs. 2130.

- (2) In the case of employees who retire on or after the 1st day of November, 1993, dearness relief shall be payable for every rise or be recoverable for every fall, as the case may be, of every 4 points over 1148 points in the quarterly average of the All India Average Consumer Price Index for Industrial Workers in the series 1960=100. Such increase or decrease in dearness relief for every said four points shall be calculated in the manner given below :—

Scale of basic pension per month	The rate of dearness relief as a percentage of basic pension
(1)	(2)
(i) upto Rs. 2,400	0.35 per cent.
(ii) Rs. 2,401 to Rs. 3,850	0.35 per cent. of Rs. 2,400 plus 0.29 per cent. of basic pension in excess of Rs. 2,400
(iii) Rs. 3,851 to Rs. 4,100	0.35 per cent. of Rs. 2,400 plus 0.29 per cent. of the difference between Rs. 3,850 and Rs. 2,400 plus 0.17 per cent. of basic pension in excess of Rs. 3,850.
(iv) above Rs. 4,100	0.35 per cent. of Rs. 2,400 plus 0.29 per cent. of the difference between Rs. 3,850 and Rs. 2,400 plus 0.17 per cent. of the difference between Rs. 4,100 and Rs. 3,850 plus 0.09 per cent. of basic pension in excess of Rs. 4,100.

- (3) Dearness relief shall be payable for the half year commencing from the 1st day of February and ending with 31st day of July on the quarterly average of the index figures published for the months of October, November and December of the previous year and for the half year commencing from the 1st day of August and ending with the 31st day of January on the quarterly average of the index figures published for the months of April, May and June of the same year.

- (4) In the case of family pension, invalid pension and compassionate allowance, dearness relief shall be payable in accordance with the rates mentioned above.

- (5) Dearness relief will be allowed on full basic pension even after commutation.

- (6) Dearness relief is not payable on additional pension.

APPENDIX—V
(See Paragraph 38)

The ordinary rates of family pension shall be as under :

(a) In respect of employees retired before 1-11-1993

Scale of pay per month	Amount of monthly Family Pension
(1)	(2)
Upto Rs. 1500	30 per cent. of the 'pay' shall be the basic family pension plus 30 per cent. of allowance which are counted for making contributions to Provident fund but not for dearness allowance shall be the additional family pension. The aggregate of basic and additional family pension shall not be less than Rs. 375 per month.
Rs. 1501 to Rs. 3000	20 per cent. of the 'pay' shall be the basic family pension plus 20 per cent. of allowances which are counted for making contributions to Provident Fund but not for dearness allowance shall be the additional family pension. The aggregate of basic and additional family pension shall not be less than Rs. 450 per month.
Above Rs. 3000	15 per cent. of the 'pay' shall be the basic family pension plus 15 per cent. of allowances which are counted for making contributions to Provident Fund but not for dearness allowance shall be the additional family pension. The aggregate of basic and additional family pension shall not be less than Rs. 600 per month and more than Rs. 1250 per month.

(b) In respect of employees retired or retiring on or after 1-11-1993

Scale of pay	Amount of monthly Family Pension
(1)	(2)
Upto Rs. 2870	30 per cent. of the 'pay' shall be the basic family pension plus 30 per cent. of the allowances which are counted for making contributions to Provident Fund but not for dearness allowance shall be the additional family pension. The aggregate of basic and additional family pension shall be subject to a minimum of Rs. 720 per month.
Rs. 2871 to Rs. 5740	20 per cent. of the 'pay' shall be the basic family pension plus 20 per cent. of the allowances which are counted for making contributions to Provident Fund but not for dearness allowance shall be the additional family pension. The aggregate of basic and additional family pension shall be subject to a minimum of Rs. 860 per month.
Above Rs. 5740	15 per cent. of the 'pay' shall be the basic family pension plus 15 per cent. of the allowances which are counted for making contributions to Provident Fund but not for dearness allowance shall be the additional family pension. The aggregate of basic and additional family pension shall be subject to a minimum of Rs. 1150 per month and a maximum of Rs. 2400 per month.

Notes:—(i) Dearness relief is not payable on additional family pension.

(2) "Scale of pay" for the purpose of calculation of family pension as above shall be aggregate of "pay" as defined in sub-clause (p) of paragraph 2 and "allowances" as defined in the explanation to sub-paragraph (3) of paragraph 34.

[F. No. 2(4)/Ins. III/94- (ii)]
C. S. RAO, Jr. Secy.

Explanatory Memorandum

The General Insurance Corporation of India was established under section 9 of the General Insurance Business (Nationalisation), Act, 1972. The terms and conditions of service of the employees of the Corporation and its Subsidiary Companies are governed by the Rationalisation Schemes made by the Central Government under sections 16 and 17A of the said Act.

The Rationalisation Schemes under sections 16 and 17 A of the Act do not provide for payment of pension except for the transferred employees.

There has been persistent demand from the employees of the Corporation and Company for introduction of pension scheme in the Corporation and Companies. The Corporation in consultation with the associations of Employees, have recommended

introduction of an index-linked pension scheme in lieu of Corporations, or Company's contribution to the Provident Fund with effect from 1st November, 1993.

The proposed pension scheme will be applicable to those who joined the service of the Corporation or subsidiary Companies on or after 1-11-1993. However the benefit of the pension scheme is proposed to be extended to those who retired or died on or after 1-1-1986. It is also proposed to provide the benefit of family pension in respect of those employees who died subject to fulfilling certain conditions.

It is certified that no employee of the Corporation or of the concerned Company is likely to be affected adversely by the introduction of the pension scheme with retrospective effect.